सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com
परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 176, नई दिल्ली । गुरुवार, 05 सितम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

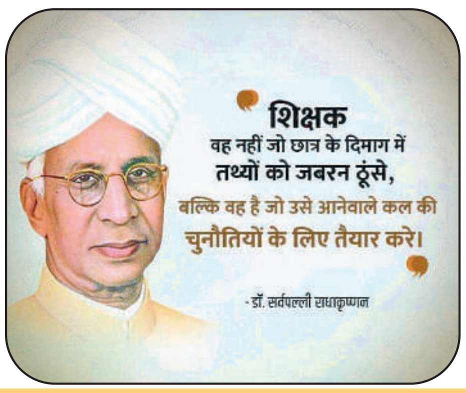

03 दलितों को उचित प्रतिनिधित्व न देने में भाजपा और आम आदमी पार्टी एकमत है
06 विज्ञापन में करियर विकल्प
08 ओडिशा में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या बढ़ती जा रही है

प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर जबरन जनता के घरों में खड़े वाहन उठवाने वाले परिवहन विभाग पर प्रदूषण को बढ़ावा देने के लिए लगाया गया 40 लाख से भी अधिक का जुर्माना, जानें किसने

पेड़ों के नुकसान पर परिवहन विभाग पर लगाया गया 40 लाख का जुर्माना

संजय बाटला

नई दिल्ली: 2019 में बुराड़ी में एक बस डिपो के निर्माण के लिए पेड़ों की कटाई के बदले में 5,600 से अधिक पौधों का प्रतिपूरक वृक्षारोपण करने में विफल रहने पर दिल्ली परिवहन विभाग पर 40.18 लाख का जुर्माना लगाया गया और उसकी ₹2.82 करोड़ की सुरक्षा जमा राशि जब्त कर ली गई। - 2 सितंबर को वन और वन्यजीव विभाग द्वारा नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल को सौंपी गई एक रिपोर्ट में।

वन विभाग ने कहा कि वह अब योजना को अंजाम देगा, और परिवहन विभाग से इस उद्देश्य के लिए 50,000 वर्ग मीटर भूमि पार्सल सौंपने के लिए कहा।

"आपके (परिवहन विभाग) द्वारा 7 मार्च, 2024 को लिखे एक पत्र में इसका उल्लेख किया गया है

बुराड़ी परिसर में फरवरी 2020 और जून और अगस्त 2022 में 1,000 पौधों का रोपण पहले ही हो चुका है। कहा गया कि 1,000 पौधों में से 830 जीवित बचे थे। हालाँकि एक संयुक्त निरीक्षण 1 मई को वन विभाग के अधिकारियों और परिवहन विभाग के प्रतिनिधियों के साथ साइट की जांच की गई। निरीक्षण के दौरान वे पता लगाने में विफल रहे। वन विभाग ने अपनी रिपोर्ट में कहा, "भौतिक रूप से जमीन पर क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण।"

वन विभाग ने 2019 में 495 पेड़ों को काटने या ट्रांसप्लांट करने की अनुमति दी थी।

कहा कि 4,950 पौधों के लिए 1:10 के अनुपात में क्षतिपूर्ति वृक्षारोपण लंबित था। 495 पेड़ों में से 168 का प्रत्यारोपण किया जाना था। अप्रैल में, एचटी ने बताया कि वन विभाग ने पाया कि जिन 168 पेड़ों को प्रत्यारोपित किया जाना था उनमें से केवल 27 पेड़ ही इस प्रक्रिया में बचे थे, और शेष 141 या तो पूरी तरह से सूख गए थे या "गायब" थे। इसके लिए 1:5 के अनुपात में अन्य 705 वृक्षों का प्रतिपूरक वृक्षारोपण करने का निर्देश दिया गया। **"इसलिए, एनजीटी के निर्देशों के अनुपालन में, वृक्ष अधिकारी के रूप में, मुझे प्रतिपूरक योजना बनाने के लिए दिल्ली वृक्ष संरक्षण अधिनियम, 1994 की**

धारा 12 के तहत ₹2.82 करोड़ की सुरक्षा जमा राशि जब्त करने का अधिकार है। 5,655 पौधों में से (4.950+705) ।इसके द्वारा 705 पौधों के प्रतिपूरक वृक्षारोपण के लिए 140.18 लाख की अतिरिक्त राशि जमा करने के साथ-साथ इस प्रतिपूरक वृक्षारोपण को करने के लिए सात साल की अवधि के लिए 50,895 वर्गमीटर भूमि सौंपने का अनुरोध किया गया है," उप संरक्षक द्वारा तैयार किया गया एक पत्र वन (मध्य) का, जो रिपोर्ट का हिस्सा है।

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने बस डिपो के लिए 3,000 से अधिक पेड़ों की कथित कटाई पर पिछले फरवरी में दिल्ली निवासी प्रमोद त्यागी द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई करते हुए, पूर्व विभाग को दी गई अनुमति और पेड़ों की वास्तविक संख्या का विवरण रिकॉर्ड में रखने का निर्देश दिया। पेड़ काटे गए.

परिवहन विभाग ने टिप्पणी के अनुरोधों का जवाब नहीं दिया।

रिठाला-नरेला मेट्रो कॉरिडोर का अब हरियाणा तक होगा विस्तार, दिल्ली सरकार ने दी मंजूरी

परिवहन विशेष न्यूज

रिठाला-नरेला मेट्रो कॉरिडोर की हरियाणा के नाथूपर तक विस्तार के बाद इसकी लंबाई 22.91 किमी से बढ़कर 23.737 किमी हो गई है। गहलोत ने कहा कि यह विस्तार दिल्ली और हरियाणा दोनों के निवासियों के लिए दैनिक आवागमन में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा। विस्तारित परियोजना पर 6230.99 करोड़ की अनुमानित लागत से चार वर्षों के भीतर पूरा किया जाएगा।

नई दिल्ली। दिल्ली और हरियाणा के बीच यात्रा करने वाले हजारों लोगों के लिए दैनिक आवागमन को आसान बनाने के उद्देश्य से परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने बुधवार को रिठाला-नरेला मेट्रो कॉरिडोर को दिल्ली-हरियाणा सीमा तक विस्तारित करने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि दिल्ली सरकार ने इसे सैद्धांतिक मंजूरी दे दी है।

दिल्ली मेट्रो परियोजना (Delhi Metro Project Phase 4) के चरण-4 के तहत दिल्ली मेट्रो लाइन को अब हरियाणा के कुंडली-नाथूपुर तक बढ़ाया जाएगा। गहलोत ने कहा कि रिठाला-नरेला-कुंडली-नाथूपुर कॉरिडोर चार साल में पूरा होगा।

प्रोजेक्ट में 6230 करोड़ की लागत

इस विस्तार से यात्रियों को महत्वपूर्ण राहत मिलेगी और दोनों राज्यों के बीच कनेक्टिविटी बढ़ेगी। विस्तारित परियोजना पर 6230.99 करोड़ की अनुमानित लागत से चार वर्षों के भीतर पूरा किया जाएगा। दिल्ली वाले हिस्से की कुल लंबाई 22.91 किमी से बढ़ाकर 23.737 किमी कर दी गई है, जबकि हरियाणा हिस्से की लंबाई 2.726 किमी होगी।

इससे नरेला से नाथूपुर तक की संयुक्त लंबाई 26.463 किमी लंबी हो जाएगी। विस्तार में रिठाला और नरेला के बीच 19 स्टेशन होंगे, जबकि हरियाणा में दो स्टेशन होंगे।

दिल्ली-हरियाणा के आवागमन होगा सुविधाजनक

इस बारे में दिल्ली सचिवालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में गहलोत ने कहा कि यह विस्तार दिल्ली और हरियाणा दोनों के निवासियों के लिए दैनिक आवागमन में सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने कहा कि मेट्रो नेटवर्क का विस्तार करके हमारा लक्ष्य यात्रा के समय को कम करना है तथा सड़कों पर भीड़ को कम करने उद्देश्य से सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को बढ़ावा देना है।

इन मेट्रो कॉरिडोर पर काम चल रहा

बता दें कि वर्तमान में मुकुंदपुर (मजलिस पार्क) - मौजपुर, एरोसिटी - तुगलकाबाद, और जनकपुरी पश्चिम - आरके आश्रम कॉरिडोर निर्माणाधीन हैं। लाजपत नगर - साकेत जी ब्लॉक और इंद्रलोक - इंद्रप्रस्थ कॉरिडोर निविदा प्रक्रिया में हैं। रिठाला-नरेला-नाथूपुर कॉरिडोर अगला कॉरिडोर होगा, जो दिल्ली के मेट्रो नेटवर्क का और विस्तार करेगा और क्षेत्र में बेहतर कनेक्टिविटी लाएगा।

रिठाला-नरेला-नाथूपुर कॉरिडोर दिल्ली मेट्रो चरण-4 प्रोजेक्ट का हिस्सा है, जिसमें छह कॉरिडोर शामिल हैं।

मुकुंदपुर (मजलिस पार्क) - मौजपुर
एरोसिटी - तुगलकाबाद
जनकपुरी पश्चिम - आर.के. आश्रम
लाजपत नगर - साकेत जी ब्लॉक
इन्द्रलोक - इन्द्रप्रस्थ

ग्रेनो वेस्ट से ग्रेटर नोएडा को जोड़ने वाली सड़क पर बिना रुकावट अब दौड़ेंगे वाहन

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा को ग्रेटर नोएडा वेस्ट से जोड़ने के लिए बनाई गई 130 मीटर सड़क के दोनों ओर के 50 मीटर के विवादित हिस्सा का आखिरकार हल निकल आया है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण व तोशा कंपनी के बीच इस हिस्से को लेकर सहमति बन गई है।

प्राधिकरण करीब चार एकड़ जमीन का अधिग्रहण करेगा। अगले दो से तीन महीने में सड़क का निर्माण करा दिया जाएगा। इसके बनने से ग्रेटर नोएडा वेस्ट की सिरसा गांव स्थित ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे तक बिना रुकावट की कनेक्टिविटी हो जाएगी।

28 किमी लंबी इस सड़क का पूरा हिस्सा ठीक है, लेकिन तिलपता गोल चक्कर से आगे देवला गांव के पास मात्र 50 मीटर सड़क का निर्माण नहीं हुआ था। इस हिस्से में गड्ढे ही गड्ढे हैं। 19 वर्ष के लंबे इंतजार के बाद प्राधिकरण और कंपनी में सहमति बनी है।

अन्य हिस्से को लेकर पहले की तरह मामला कोर्ट में चलता रहेगा। आमजन से जुड़े इस मुद्दे को दैनिक जागरण लगातार उठा रहा था। यहां से प्रतिदिन करीब 40 हजार वाहन गुजरते हैं। एयरपोर्ट के संचालन के बाद संख्या और बढ़ जाएगी।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण ने 2004 में सिरसा व डाढ़ा गांव से ग्रेटर नोएडा वेस्ट तक 28 किमी सड़क का निर्माण शुरू किया था। ग्रेटर नोएडा वेस्ट से सड़क को नोएडा और गाजियाबाद से भी जोड़ा गया है। तिलपता गोल चक्कर से आगे देवला गांव के पास तोशा कंपनी की फैक्ट्री का करीब 50 मीटर जमीन का कुछ हिस्सा आ गया।

कंपनी कोर्ट से स्टे आर्डर ले आई। तभी से प्राधिकरण और कंपनी के बीच मुआवजे के लेकर विवाद चल रहा है। इसके बाद कई बार जमीन को लेकर कंपनी प्रबंधन व प्राधिकरण के बीच बैठक हुई लेकिन सहमति नहीं बन सकी।

पिछले दिनों प्राधिकरण सीईओ एनजी रवि कुमार ने कंपनी अधिकारियों के साथ बैठक कर जनहित का हवाला देकर जमीन देने को कहा जिस पर सहमति बनई गई। इसके एवज में प्राधिकरण कंपनी को अन्य विकल्प देगा।

130 मीटर सड़क पर कामर्शियल जगह की मांग कर चुकी कंपनी

जानकारी के मुताबिक पूर्व में हुई बैठक में कंपनी ने मुआवजे के बजाय 130 चौड़ी सड़क पर इतना ही क्षेत्रफल कामर्शियल भूखंड के रूप में मांगा था। प्राधिकरण ने कामर्शियल भूखंड देने से इंकार कर दिया था। इसके बाद मामला अदालत पर ही निर्भर हो गया है।

पेरिफेरल एक्सप्रेसवे तक का है लिंक

पहले ये सड़क सिरसा गांव तक बनाई गई थी। सिरसा के पास से ही दिल्ली के चारों तरफ बना पेरिफेरल एक्सप्रेसवे गुजर रहा है। 130 मीटर सड़क को एक्सप्रेसवे से जोड़ दिया गया। इसके बनने से ग्रेटर नोएडा से फरीदाबाद, गुरुग्राम, सोनीपत, नारनौल, बहादुरगढ़, गाजियाबाद, हापुड़ व बागपत जाना आसान हो गया। यही कारण है कि सड़क पर यातायात का दबाव अधिक है।

हो चुकी आपराधिक घटनाएं

50 मीटर हिस्सा पूरी तरह से जर्जर होने के कारण वाहनों की गति काफी धीमी हो जाती है। पूर्व में इस हिस्से में आपराधिक घटनाएं भी हो चुकी हैं। सुनसान इलाका होने के कारण बदमाशों को वारदात अंजाम देने में आसानी होती है। 2017 में एक ठेकेदार को तीन बदमाशों ने बंधक बना लिया था। दूसरी घटना आइएएस की तैयारी कर रहे युवा की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। उसकी कार भी लूट ली थी।

निर्माण शुरू हुआ : 2004
निर्माण कार्य पूरा हुआ : 2014
निर्माण पर लागत आई करीब 550 करोड़
सड़क की लंबाई : 28.2 किमी
सड़क की चौड़ाई : 130 मीटर

130 मीटर सड़क के विवादित हिस्से का हल निकाल लिया है। कंपनी के साथ सहमति बन गई है। जल्द ही इस हिस्से को दुरुस्त करा दिया जाएगा। जनहित को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। हजारों वाहन चालकों को राहत मिलेगी।

एनजी रवि कुमार, सीईओ, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण

पर्यावरण पाठशाला : शिक्षक दिवस का महत्व और 10 महत्वपूर्ण सीखें जो उम्रभर आपके साथ रहेंगी

डॉ. अंकुर शरण

शिक्षक दिवस का महत्व

शिक्षक दिवस एक ऐसा अवसर है जब हम उन महान गुरुओं और शिक्षकों का सम्मान करते हैं, जिन्होंने हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह दिन न केवल हमें उनके प्रति आभार व्यक्त करने का मौका देता है, बल्कि हमें उनके मार्गदर्शन और सीख को भी याद दिलाता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन पर मनाया जाने वाला यह दिन, उनके शैक्षिक योगदान और आदर्शों को समर्पित है। एक अच्छा शिक्षक हमें न केवल किताबों की जानकारी देता है, बल्कि जीवन के महत्वपूर्ण पाठ भी सिखाता है, जो हमें स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

पर्यावरण पाठशाला के माध्यम से 10 महत्वपूर्ण सीखें

पर्यावरण पाठशाला एक अनूठी पहल है, जिसका उद्देश्य हमें प्रकृति से जीवन के अनमोल सबक सिखाना है। ये सीखें हमारी उम्र, पेशा, या सामाजिक स्थिति के बावजूद हमारे साथ रहेंगी। आइए जानते हैं ये 10 महत्वपूर्ण सीखें:

सहनशीलता (Patience): पेड़ हमें सिखाते हैं कि सब्र का फल मीठा होता है। धीरे-धीरे बढ़ने वाला पेड़, हमें सहनशीलता का पाठ पढ़ाता है, जो जीवन के हर संघर्ष में हमारी मदद करता है।

सादगी (Simplicity): प्रकृति की हर चीज में एक सादगी होती है। जैसे फूल बिना किसी दिखावे के खिलते हैं,

वैसे ही हमें भी सादगी से जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए।

समझदारी (Wisdom): जैसे नदी अपनी राह खुद चुनती है, वैसे ही हमें भी अपनी समझ से जीवन में निर्णय लेने चाहिए। समझदारी से लिए गए निर्णय हमें सही मार्ग पर ले जाते हैं।

समानता (Equality): प्रकृति में कोई भेदभाव नहीं होता। हर प्राणी समान रूप से धरती पर अपना अधिकार रखता है। यह हमें सिखाता है कि हमें भी सभी को समान नजरिए से देखना चाहिए।

अनुकूलता (Adaptability): प्रकृति में हर जीव बदलते मौसम के अनुसार खुद को ढाल लेता है। यह सीख हमें जीवन में आने वाले हर बदलाव को अपनाने की प्रेरणा देती है।

सहयोग (Cooperation): जैसे पेड़, पौधे, और जीव एक-दूसरे के साथ मिलकर जीवन चक्र को चलाते हैं, वैसे ही हमें भी अपने परिवार, समाज और कार्यस्थल पर मिलकर काम करना चाहिए।

नवीनता (Innovation): प्रकृति हमें सिखाती है कि जीवन में हमेशा कुछ नया सीखना और करना चाहिए। जैसे मौसम बदलते हैं, वैसे ही हमें भी अपनी सोच और कार्यशैली में नयापन लाना चाहिए। नवीनता हमें चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाती है।

स्वास्थ्य का ध्यान (Health Awareness): जैसे पौधे सूरज की रोशनी, पानी और मिट्टी से अपनी सेहत बनाए रखते हैं, वैसे ही हमें भी अपने शरीर और मन का ध्यान रखना चाहिए। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, और पर्याप्त आराम हमारी सेहत के लिए जरूरी हैं।

धैर्य और शांति (Patience and Peace): पहाड़ों और नदियों की शांति हमें धैर्य और शांति का महत्व सिखाती है। जब हम शांत रहते हैं, तो हम बेहतर निर्णय ले सकते हैं और जीवन की मुश्किलों का सामना धैर्यपूर्वक कर सकते हैं।

धैर्य का फल (Reward of Patience): पेड़ वर्षों के धैर्य के बाद फल देते हैं, वैसे ही जीवन में भी धैर्यपूर्वक किए गए प्रयासों का फल हमें मिलता है। यह हमें सिखाता है कि धैर्य और निरंतरता से हम जीवन में सफल हो सकते हैं।

शिक्षक दिवस के अवसर पर, हमें न केवल अपने शिक्षकों का सम्मान करना चाहिए, बल्कि प्रकृति से मिलने वाली इन अनमोल सीखों को भी जीवन में अपनाना चाहिए। पर्यावरण पाठशाला के माध्यम से सीखी गई ये 10 महत्वपूर्ण बातें हमारे जीवन को स्वस्थ, सुखी और संतुलित बनाने में सहायक होंगी। चाहे हमारी उम्र कोई भी हो, ये सीखें हमारे साथ रहेंगी और हमें हर परिस्थिति में मार्गदर्शन करेंगी।

महागणपति चतुर्थी, 07 सितंबर 2024 शनिवार

आप सभी तैयारियां सुबह जल्दी कर ले जैसे- मंदिर ,चौकी, पंडाल आदि सजाना, फूल व अशोक के पत्तों की बंदरवार लगाना आदि पूजा की तैयारियां पहले करके रखें और ऊपर दिए हुए शुभ मुहूर्त पर भगवान श्री गणेश जी को स्थापित करके पूजा शुरु कर दें। यह समय पूजा शुरू करने का है, उसके बाद आप पूजा कितनी भी देर तक कर सकते हैं वह आप पर निर्भर है।

श्रीगणेश चतुर्थी पूजन मुहूर्त-:

* 07 सितंबर, शनिवार को मध्याह्न काल में चतुर्थी होने से इसी दिन महागणपति चतुर्थी मनाई जाएगी।

* श्री गणेश पूजन के लिए शास्त्रों में मध्याह्न काल को श्रेष्ठ माना गया है। जो दिन के 11:11 से दोपहर 01:40 तक रहेगा।

* दिन में 11:28 से दोपहर 01:40 बजे तक वृश्चिक लग्न रहेगा, यह एक स्थिर लग्न है, जोकि श्रीगणेश पूजा के लिए शुभ है।

* दिन में 11:55 से 12:45 तक अभिजीत नामक श्रेष्ठ शुभ मुहूर्त भी रहेगा।

* इस दिन सुबह 07:40 से 09:00 तक शुभ का चौघड़िया रहेगा, उसके उपरांत दोपहर 12:19 से शाम05:00 बजे तक क्रमशः चर,लाभ, व अमृत के शुभ चौघड़िये भी विद्यमान रहेंगे।। ________

श्रीगणेश स्थापना-पूजा विधि-:

आप सभी तैयारियां सुबह जल्दी कर ले जैसे- मंदिर ,चौकी, पंडाल आदि सजाना, फूल व अशोक के पत्तों की बंदरवार लगाना आदि पूजा की तैयारियां पहले करके रखें और ऊपर दिए हुए शुभ मुहूर्त पर भगवान श्री गणेश जी को स्थापित करके पूजा शुरू कर दें। यह समय पूजा शुरू करने का है, उसके बाद आप पूजा कितनी भी देर तक कर सकते हैं वह आप पर निर्भर है।

1. सबसे पहले चौकी पर गंगाजल छिड़कें और इसे शुद्ध कर लें।
2. इसके बाद चौकी पर लाल रंग का कपड़ा बिछाएं और उस पर अक्षत (चावल) रखें।
3. भगवान श्रीगणेश की मूर्ति को चौकी पर स्थापित करें।
4. अब भगवान गणेश को स्नान कराएं और गंगाजल छिड़कें।
5. मूर्ति के दोनों ओर रिद्धि-सिद्धि के रूप में एक-एक सुपारी रखें।
6. भगवान गणेश की मूर्ति के दाईं ओर जल से भरा कलश रखें।
7. हाथ में अक्षत और फूल लेकर गणपति बप्पा का ध्यान करें और ये उन्हें समर्पित करें।
8. गणेशजी के मंत्र ₹ॐ गं गणपतये नमः₹ मंत्र का जाप करें।
9. श्री गणेश जी को आप सिंदूर, कुमकुम,अक्षत, दूर्वा, नारियल, मोदक, सुपारी, गुड़हल व गेंदे के फूल, केला आदि समर्पित कर सकते हैं।
10. तदुपरांत आप श्री गणेश जी की आरती कीजिए और मंगल कामनाओं के लिए प्रार्थना कीजिए।।

नोट-: श्री गणेश चतुर्थी के दिन शास्त्र मतानुसार चंद्र दर्शन नहीं करना चाहिए। श्री गणेश जी को तुलसी पत्र भी अर्पित नहीं करना चाहिए।

"वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥"

अर्थ-: घुमावदार सूंड वाले, विशाल शरीर काय, करोड़ सूर्य के समान महान प्रतिभाशाली। मेरे प्रभु, हमेशा मेरे सारे कार्य बिना विघ्न के पूरे करें (करने की कृपा करें)।।

स्वास्तिक चिन्ह

● स्वस्तिक चिन्ह का आविष्कार आर्यों ने किया और पूरे विश्व में यह फैल गया। आज स्वस्तिक का प्रत्येक संप्रदाय और संस्कृति में अलग-अलग रूप में इस्तेमाल किया गया है।

● स्वस्तिक शब्द को 'सु' एवं 'अस्ति' का मिश्रण योग माना जाता है। 'सु' का अर्थ है शुभ और 'अस्ति' का अर्थ है- होना। अर्थात 'शुभ हो', 'कल्याण हो'। स्वस्तिक अर्थात कुशल एवं कल्याण। सनातन संस्कृति में स्वस्तिक को शक्ति, सौभाग्य, समृद्धि और मंगल का प्रतीक माना जाता है। हर मंगल कार्य में इसको बनाया जाता है।

● स्वस्तिक का बायां हिस्सा गणेशजी की शक्ति का स्थान 'गं' बीजमंत्र होता है। इसमें जो चार बिंदियां होती हैं, उनमें गौरी, पृथ्वी, कच्छप और अनंत देवताओं का वास होता है।इस मंगल-प्रतीक का गणेशजी की उपासना, धन, वैभव और ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मीजी के साथ, बही-खाते की पूजा की परंपरा आदि में विशेष स्थान है।

● स्वास्तिक की चारों दिशाओं के अधिपति देवताओं, अग्नि, इन्द्र, वरुण एवं सोम की पूजा हेतु एवं सप्तऋषियों के आशीर्वाद को प्राप्त करने में प्रयोग किया जाता है। यह चारों दिशाओं और जीवन चक्र का भी प्रतीक है।

● घर के वास्तु को ठीक करने के लिए स्वस्तिक का प्रयोग किया जाता है। घर के पूजा स्थल व घर के द्वार पर स्वास्तिक का चिन्ह बनाने से घर के वास्तु दोष दूर होते हैं।

● स्वस्तिक के चिह्न को भाग्यवर्धक वस्तुओं में गिना जाता है। स्वस्तिक के प्रयोग से घर की नकारात्मक ऊर्जा बाहर चली जाती है।

● वैज्ञानिक रिसर्च में भी पाया गया है कि स्वास्तिक का चिन्ह सभी धर्मो के पवित्र चिन्हों में सबसे शक्तिशाली सकारात्मक ऊर्जा वाला चिन्ह है।

● अपने घर में पवित्र स्थानों पर व घर के मुख्य द्वार पर स्वस्तिक का चिन्ह जरूर बनाएं। इस चिन्ह को शुभ समय में गाय के घी में सिंदूर मिलाकर बनाएं। आप सोने, चांदी, तांबा, पीतल या अष्ट धातु से भी स्वस्तिक का चिन्ह बनवा कर भी लगा सकते हैं।स्वस्ति चिन्ह की लंबाई चौड़ाई 9 ऊंगल के बराबर होनी चाहिए।।

● स्वस्तिक मंत्र-:

ॐ स्वस्ति न इंद्रो वृद्ध-श्रवा-हा स्वस्ति न-ह पूषा विश्व-वेदा-हा।
स्वस्ति न-ह ताक्षर्‌यो अरिष्ट-नेमि-हि स्वस्ति नो बृहस्पति-हि-दधातु।।

अर्थात-: महान कीर्ति वाले इन्द्र हमारा कल्याण करो, विश्व के ज्ञानस्वरूप पूषादेव हमारा कल्याण करो। जिसका हथियार अटूट है ऐसे गरूड़ भगवान हमारा मंगल करो। बृहस्पति हमारा मंगल करो।

07 सितंबर 2024, शनिवार को श्रीगणेश चतुर्थी है अतः आप घर के मंदिर में व मुख्य दरवाजे पर स्वास्तिक का चिन्ह जरूर बनाएं।।

शिक्षक को देखा

सबसे पहले शिक्षक है माता-पिता,
जिनसे ऊँगली पकड़ चलना सीखा।
उन शिक्षकों की बात ही निराली,
₹अ, आ₹ और ₹ए टू ज़ेड₹ लिखा।
देखों डाट-डपट और प्यार का,
हमने बचपन में सामंजस्य देखा।
जब नहीं किया होमवर्क तो,
छड़ी के साथ रौद्र रूप भी देखा।
माता-पिता ने जब भी डाटा,
शिक्षक को दुलारते हुए देखा।
ज़ब हमने कई बार की गलती,
तब प्यार से समझाते हुए देखा।
शुल्क की जब भी बात आती,
प्राचार्य से निवेदन करते देखा।
अभिभावकों और विद्यालय को,
एक सूत्र में माला बन पिरोते देखा।
करूं क्या बखान उन शिक्षक का?
न जाने उन्हें क्या-क्या सहते देखा।
कभी-भी आंच ना आई हम पर,
हमारे भविष्य को गढ़ते देखा।
सहज गुजारा हो जीवन का,
शिक्षक को रक्षक बनकर देखा।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)
98260-25986

हम 5 सितंबर को शिक्षक दिवस क्यों मनाते हैं? जानिए इतिहास और महत्व

विजय गर्ग

विभिन्न देशों में अलग-अलग तारीखों पर मनाया जाने वाला यह दिन ज्ञान प्रदान करने, आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने और छात्रों को प्रेरित करके भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता देता है। कई देशों में, शिक्षक दिवस शिक्षा के क्षेत्र में एक उल्लेखनीय व्यक्ति के जन्मदिन पर मनाया जाता है। भारत में यह प्रतिवर्ष 5 सितम्बर को मनाया जाता है।

यह दिन भावी पीढ़ियों के पोषण, मार्गदर्शन और सशक्तीकरण में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाता है। यहां उस दिन के बारे में वह सब कुछ है जो आपको जानना आवश्यक है।

शिक्षक दिवस 2024: तिथि और इतिहास

शिक्षकों को सम्मानित करने और समाज को सशक्त बनाने और शिक्षित करने में उनके महत्वपूर्ण योगदान को पहचानने के लिए, भारत में, शिक्षक दिवस प्रतिवर्ष 5 सितंबर को मनाया जाता है। 2024 में, यह 5 सितंबर, गुरुवार को मनाया जाएगा।

इसके अतिरिक्त, यह तिथि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती भी है, जो भारत के दूसरे राष्ट्रपति और एक प्रसिद्ध विद्वान और दार्शनिक थे, जिनका जन्म 5 सितंबर, 1888 को हुआ था।

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन

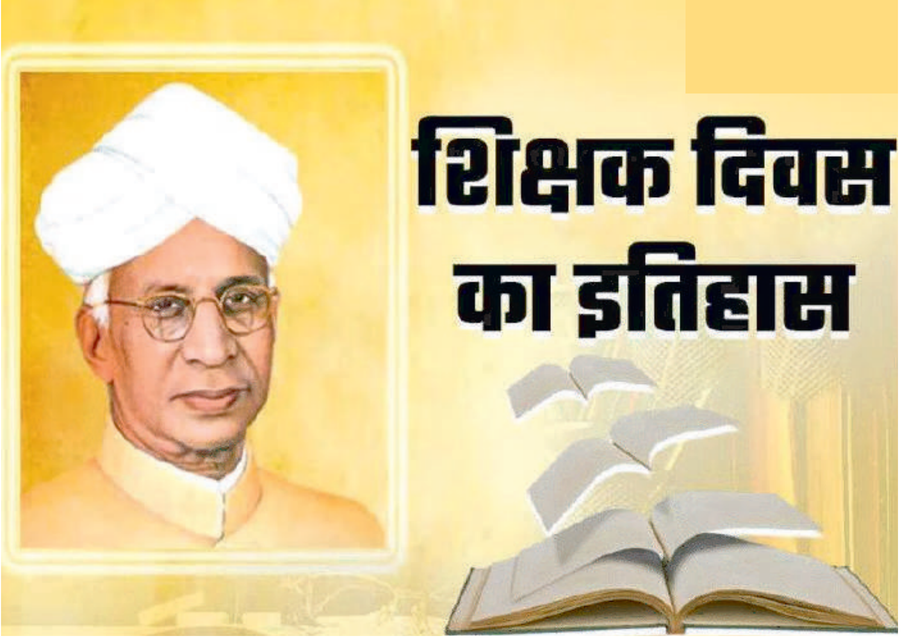

पहला शिक्षक दिवस 1962 में उनके 77वें जन्मदिन पर मनाया गया था, जहाँ शिक्षक दिवस मनाने की परंपरा तब शुरू हुई जब डॉ. राधाकृष्णन से उनके छात्रों ने संपर्क किया जो उनका जन्मदिन मनाना चाहते थे। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि व्यक्तिगत उत्सव के बजाय, यह दिन देश भर में शिक्षकों के सम्मान के लिए समर्पित होना चाहिए। इस विचार को अपनाया गया, जिससे भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति और व्यक्तियों और राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका में विश्वास करते थे।

शिक्षक दिवस 2024: महत्व और उत्सव

शिक्षक दिवस न केवल अपने छात्रों के जीवन बल्कि समाज के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका की याद दिलाता है।

यह छात्रों के लिए अपने शिक्षकों के समर्पण और कड़ी मेहनत के प्रति आभार व्यक्त करने, ज्ञान और मूल्य प्रदान करने में उनके प्रभाव को पहचानने का दिन है।

यह दिन शिक्षकों के बीच शिक्षा पर उनके प्रभाव और योगदान के बारे में चिंतन को प्रोत्साहित करता है, साथ ही इस दिन को शिक्षकों के सम्मान और सराहना के लिए डिज़ाइन किए गए विभिन्न समारोहों और गतिविधियों द्वारा चिह्नित किया जाता है।

कई स्कूलों और संस्थानों में, शिक्षकों के योगदान और समर्पण को पहचानने के लिए असेंबली, प्रदर्शन और पुरस्कार समारोह जैसे विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

महिलाएं अधिक अनुशासित, केंद्रित और मेहनती होती हैं, जो उत्पादकता बढ़ाती हैं और सकारात्मक कार्य संस्कृति बनाती हैं

विजय गर्ग

आर्थिक उत्पादकता में वृद्धि ने प्रतिभा की मांग बढ़ा दी है। आज, जब नियोक्ता अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक कुशल कार्यबल की तलाश कर रहे होते हैं तो वे लैंगिक अज्ञेयवादी होते हैं और पारंपरिक रूप से पुरुष-केंद्रित नौकरी भूमिकाओं के लिए भी महिलाओं के लिए खुले होते हैं। हाल के आंकड़ों के अनुसार, महिला श्रम बल भागीदारी दर पांच साल पहले के 23% के मुकाबले 37% है और 25% प्रशिक्षु महिलाएं हैं। विभिन्न सरकारी पहल और नीतियां महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देती हैं। खुदरा, बैंकिंग, स्वास्थ्य देखभाल, आतिथ्य और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में अधिकतम महिला कार्यबल है, लेकिन सबसे हालिया प्रवृत्ति मशीन संचालन में विनिर्माण क्षेत्र में महिला कार्यबल की वृद्धि है जो पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान रही है। पूरे भारत में, कई विनिर्माण संयंत्र महिलाओं द्वारा चलाए जाते हैं और यह चलन बढ़ रहा है। सामाजिक वर्जनाएँ टूट रही हैं क्योंकि परिवार बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे हैं। हाल की AISHE रिपोर्ट के अनुसार, महिला GER 28% है जो साल दर साल (YoY) नाममात्र 3% बढ़ी है। आज, 2 करोड़ से कुछ अधिक महिलाएँ उच्च शिक्षा में नामांकित हैं। कांच की छत को तोड़ना महिलाएं कार्यस्थल पर सिर्फ कौशल के अलावा और भी बहुत कुछ लेकर आती हैं। अधिक अनुशासित, केंद्रित और बिना बकवास के रवैये के साथ मेहनती होने से कार्य संस्कृति पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और उत्पादकता भी बढ़ती है। एक महिला अक्सर कार्यस्थल पर तकनीकी कौशल, ज्ञान और व्यक्तिगत गुणों का मिश्रण लाती है। प्रतिभा पूल विकसित करने के लिए, कई स्किलिंग, रीस्किलिंग और अपस्किलिंग पहलों के बीच, उद्योग एक प्रतिभाशाली कार्यबल बनाने के लिए शिक्षा जगत के साथ भी सहयोग कर रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 डिग्री अप्रेंटिसशिप जैसे कार्य-आधारित शिक्षा कार्यक्रमों की पेशकश करने के लिए ऐसे सहयोग को प्रोत्साहित करती है। कक्षा में सीखने की परंपरा को तोड़ते हुए, डिग्री प्रशिक्षुता सिद्धांत और नौकरी पर सीखने का मिश्रण है जिसे उद्योग विशेषज्ञों और सक्षम संकाय द्वारा वास्तविक कार्य वातावरण में उद्योग की स्थापना पर संयुक्त रूप से निष्पादित किया जाता है। अनुभवात्मक शिक्षा मौलिक है; यह संज्ञानात्मक कौशल और तकनीकी ज्ञान दोनों का निर्माण करता है। कार्यक्रम राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (एनसीआरएफ) और राष्ट्रीय कौशल योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) का पालन करते हैं। सबसे बड़ी बात कार्यक्रम का वित्तपोषण है, जो उद्योग द्वारा किया जाता है और छात्र प्रशिक्षु अच्छा वजीफा कमाते हैं। यह सिर्फ एक प्रशिक्षुता या डिग्री कार्यक्रम नहीं है, बल्कि एक समग्र कैरियर विकास कार्यक्रम है जो संगठनों को जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं को तलाशने में मदद करता है। संगठन अपने लिंग विविधता एजेंडे को पूरा करने के लिए डिग्री प्रशिक्षुता का उपयोग कर रहे हैं। प्रतिभा पाइपलाइन बनाने के लिए तकनीकी और गैर-तकनीकी दोनों पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। महिला आईटीआई उम्मीदवारों की कमी कुशल महिलाओं के लिए विनिर्माण इकाइयों में डिग्री प्रशिक्षुता को एक पसंदीदा विकल्प बनाती है। साथ ही, नियमित कॉलेज डिग्री के बजाय, रिटेल, आईटी/आईटीईएस और वित्तीय सेवाओं जैसे सेवा उद्योगों में नौकरी के लिए तैयार होने के लिए डिग्री अप्रेंटिसशिप एक अच्छा विकल्प हो सकता है। आर्थिक विकास के लिए आवश्यक ग्रामीण महिलाओं को एकजुट करने और उन्हें कौशल के माध्यम से सशक्त बनाने के लिए संगठन डिग्री प्रशिक्षुता का भी भरपूर उपयोग कर रहे हैं। कुछ लोग इन कार्यक्रमों को कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत चलाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि डिग्री अप्रेंटिसशिप के तहत वेतन समानता भी है जो युवा महिलाओं के लिए करियर बनाने को अनुकूल बनाती है। व्यावसायीकरण करनाउच्च शिक्षा में, यूजीसी ने बी वोक की शुरुआत की थी, हालांकि, नामकरण उन्हें कम आकांक्षापूर्ण बनाता है, और पिछली तीन एआईएसएचई रिपोर्टों के अनुसार, नामांकन में गिरावट आई है। औद्योगिक विशेषज्ञता

के साथ बीएससी और बीबीए जैसे डिग्री प्रशिक्षुता पाठ्यक्रम युवाओं और समाज के लिए अधिक स्वीकार्य हो गए हैं। आर्थिक उन्नति के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है। जैसे-जैसे हम 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहे हैं और 2047 तक 30 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की तैयारी कर रहे हैं, श्रम बल में महिलाओं की उच्च भागीदारी अनिवार्य है, और एक समावेशी कार्यबल बनाने में डिग्री प्रशिक्षुता प्रमुख चालक है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

एमसीडी वार्ड कमिटी की 7 सीटों पर बीजेपी का कब्जा, आप में पड़ी फूट ; देखें कहां से कौन जीता

एमसीडी के वार्ड कमेटी के साउथ जोन के चुनाव में आम आदमी पार्टी AAP को तगड़ा झटका लगा है। वहीं एमसीडी के वार्ड कमेटी के चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुए। तीन जोन में आप की तरफ से क्रास वोटिंग हुई है। अब 12 वार्ड कमेटियों में से भाजपा सात तो आप पांच पर जीत गई है।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में एमसीडी के वार्ड कमेटी के चुनाव में आम आदमी पार्टी को बड़ा झटका लगा है। जहां सात जोन में बीजेपी ने जीत दर्ज की तो वहीं पांच जोन में आप को जीत मिली है।

बता दें कि MCD ward committee polls result 2024 चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुए। तीन जोन में आप की तरफ से क्रास वोटिंग हुई है। अब 12 वार्ड कमेटियों में से भाजपा सात तो आप पांच पर जीत गई है। ऐसे में सदन से चुने गए सदस्यों को मिला लें तो 18 में से भाजपा के पास 9 आप के पास 8 तो एक पद रिक्त हैं।

आम आदमी पार्टी में पड़ी फूट

उठापटक और शह मात के खेल के बावजूद बुधवार को निगम की 12 वार्ड कमेटियों में चेयरमैन, डिप्टी चेयरमैन और स्थायी समिति के चुनाव संपन्न हो गए हैं। 12 वार्ड कमेटियों के चुनाव में भाजपा को दो वर्षों से चली आ रही जद्दोजहद में बड़ी रणनीतिक जीत मिली है। 12 में से भाजपा के प्रत्याशियों ने सात तो आम आदमी पार्टी ने पांच जोन में जीत दर्ज की है।

चुनाव में हंगामे के थे आसार

महापौर द्वारा वार्ड कमेटियों के चुनाव के लिए पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति से इनकार करने के बाद एलजी के आदेश से उपायुक्त को पीठासीन अधिकारी नियुक्ति पर चुनाव में हंगामे के आसार थे, लेकिन उसके विपरित जाकर चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुए।

भाजपा प्रत्याशियों को मिली बढ़त

चुनाव में आप के पार्षदों में चल रही अदरूनी नाराजगी और आपसी फूट तीन जोन में क्रास वोटिंग से उजागर हो रही है। 12 वार्ड कमेटियों के चुनाव में तीन जोन में आप-कांग्रेस के पांच पार्षदों ने भाजपा के पक्ष में वोटिंग की है जिससे चेयरमैन, स्थायी समिति सदस्य पर भाजपा प्रत्याशियों को बढ़त मिली। वहीं, कड़ी सुरक्षा के बीच निगम मुख्यालय में पार्षदों के समर्थकों और नाते रिश्तेदारों के प्रवेश पर लगी रोक के बीच शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न हुआ। इस चुनाव से स्थायी समिति के गठन का एक ओर चरण पूरा हो गया है। स्थायी समिति के गठन के लिए अभी दो चरण और शेष हैं।

बुधवार को हुए 12 वार्ड कमेटियों के चुनाव में सात वार्ड कमेटियों में चेयरमैन, डिप्टी चेयरमैन और स्थायी समिति के सदस्य के लिए चुनाव हुआ तो वहीं, जबकि रोहिणी जोन में केवल चेयरमैन पद पर चुनाव हुआ। जहां आप प्रत्याशी के जीत के बाद भाजपा ने डिप्टी चेयरमैन और स्थायी समिति के सदस्यों के उम्मीदवारों ने नामांकन वापस ले लिया तो वहां पर आप प्रत्याशियों ने निर्विरोध जीत दर्ज की। इसके साथ ही चार वार्ड कमेटियों में तीनों पर पदों पर प्रत्याशियों ने निर्विरोध जीत दर्ज की।

किस जोन में भाजपा जीती

नरेला, नजफगढ़, केशवपुरम, सेंट्रल, सिविल लाइंस, शाहदरा साउथ, शाहदरा नार्थ

किस जोन में आप को मिली जीती

पश्चिमी, दक्षिणी, रोहिणी,

किस जोन में हुई क्रोस वोटिंग

नरेला, शाहदरा, नार्थ, दक्षिणी

ऐसी हत्याओं पर प्रधानमंत्री और भाजपा की चुप्पी से साफ है कि इनके संरक्षण में ये घटनाएं हो रही है- संजय सिंह

सुषमा रानी

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने फरीदाबाद में गौ रक्षा के नाम पर 12वीं के छात्र आर्यन मिश्रा की हत्या में भाजपा और हरियाणा की नायब सिंह सैनी सरकार को जिम्मेदार ठहराया है। ''आप'' के वरिष्ठ नेता एवं सांसद संजय सिंह ने कहा कि तथाकथित गौ रक्षकों ने गौ रक्षा के नाम पर आर्यन को 30 किलोमीटर दौड़ाया और पीट-पीट कर मार डाला। भाजपा की नफ़रत की राजनीति की वजह से हिन्दुओं की जान जा रही है। पिछले 10 साल में गौ रक्षा के नाम पर 49 घटनाएं हुईं, जिसमें 55 लोगों की हत्या हुई और 94 लोग घायल हुए हैं, जबकि 2014-2022 के बीच 172 मॉब लिंचिंग की हुई घटनाओं में 21 हिन्दू मारे गए। उन्होंने कहा कि इन हत्याओं पर प्रधानमंत्री और भाजपा के मुंह से एक शब्द नहीं निकलता है। इसका मतलब, इनके संरक्षण में ये घटनाएं हो रही हैं। हरियाणा में भाजपा का डबल इंजन अब फेल हो गया है और इस बार प्रदेश की जनता भाजपा को सत्ता से हटाने का काम करेगी।

आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह ने बुधवार को पार्टी मुख्यालय में प्रेस वार्ता कर कहा कि हरियाणा के फरीदाबाद में एक दिल दहला देने वाली घटना घटित हुई, जिसमें गौरक्षा के नाम पर मानवता की हत्या की जा रही है। गौरक्षा के नाम पर आतंक फैलाया जा रहा है। ये कौन लोग हैं जो गायों की रक्षा और हिंदु धर्म के ठेकेदार बने हुए हैं? इन्हें किसने ये जिम्मेदारी दी है? देश के प्रधानमंत्री ऐसे सभी मामलों पर एक शब्द नहीं बोलते हैं। भाजपा ऐसी हत्याओं पर खामोश रहती है। हरियाणा की भाजपा सरकार भी ऐसी हत्याओं पर खामोशा रहती है। इसका मतलब साफ है कि हरियाणा की भाजपा सरकार खुद ऐसी हत्याओं को प्रायोजित कर रही है और इन्हें संरक्षण दे रही है। इन हिंसक कार्रवाईयों के पीछे हरियाणा सरकार है, जिसके संरक्षण में यह सब कुछ हो रहा है। 12वीं मे पढ़ने वाले छात्र आर्यन मिश्रा जिसे 30 किलोमीटर तक दौड़ाया गया। इसके बाद उसे पीट- पीटकर मार डाला गया।

संजय सिंह ने कहा कि भाजपा का बुलडोजर उत्तर प्रदेश के अकबर नगर इलाके में भी चला, जहां करीब 1800 घर और मकान तोड़े गए, जिसमें करीब 101 दुकानें भी शामिल थीं। इसके तहत ज्यादातर हिंदुओं के घर टूटे। भाजपाई इस देश को नफरत की आग में झोंकना बंद करें। उसे इस तरह धर्म और जाति के नाम पर घर टूटने पर जश्न मनाना अब बंद कर देना चाहिए। क्योंकि ये तुम्हारे घर भी चलेगा, तुम भी इससे नहीं बचोगे। हिंदू धर्म का कोई ग्रंथ ऐसी बात नहीं कहता। अपने आपको तथाकथित गौ रक्षक कहने वाले इन ठेकेदारों को कोई अधिकार नहीं है कि ये किसी की भी हत्या कर दें। आर्यन मिश्रा एक ब्राह्मण था, उसे भी गौ हत्या के नाम पर मार दिया गया। कल को ये लोग अपने पड़ोस में और घर में भी हत्या करेंगे। इन घटनाओं के लिए भाजपा और उसकी सरकार जिम्मेदार है। प्रधानमंत्री मोदी जो बार-बार हरियाणा में डबल इंजन सरकार चलाने की बात करते हैं, उन्हें इसका जवाब देना होगा। भाजपा का ये डबल इंजन फेल हो चुका है। हरियाणा की जनता इस सड़े-गले इंजन को हटाएगी।

केजरीवाल को कोर्ट से 'सुप्रीम' राहत की उम्मीद, जमानत की याचिकाओं पर सुनवाई

अरविंद केजरीवाल को आबकारी नीति घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में जमानत मिल चुकी है। उन्हें अब सीबीआई के भ्रष्टाचार मामले में जमानत का इंतजार है। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में याचिका डाली है। एक याचिका सीबीआई द्वारा गिरफ्तारी को चुनौती की है। एक याचिका के जरिए दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी है।

दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट गुरुवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की जमानत याचिकाओं पर सुनवाई करेगा। याचिका में उन्होंने दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में सीबीआई द्वारा उनकी गिरफ्तारी को चुनौती दी है।

जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जल भुइयां की पीठ इस मामले को देखेगी। शीर्ष कोर्ट ने 23 अगस्त को सीबीआई को मामले में जवाबी हलफनामा दाखिल करने की अनुमति दी थी और केजरीवाल को जवाब दाखिल करने के लिए दो दिन का समय दिया था।

सुप्रीम कोर्ट में दायर हैं दो याचिकाएं

केजरीवाल ने जमानत नहीं देने और मामले में सीबीआई द्वारा उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ दो अलग-अलग याचिकाएं दायर की हुई हैं। उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट के पांच अगस्त के आदेश को चुनौती दी है, जिसमें उनकी गिरफ्तारी को बरकरार रखा गया था।

सुप्रीम कोर्ट ने जमानत से किया था इनकार

आप प्रमुख को सीबीआई ने 26 जून को गिरफ्तार किया था। शीर्ष अदालत ने 14 अगस्त को मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने से इनकार कर दिया था और उनकी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर जांच एजेंसी से जवाब मांगा था।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मिल चुकी है जमानत

12 जुलाई को सुप्रीम कोर्ट ने मनी लॉन्ड्रिंग मामले में केजरीवाल को अंतरिम जमानत दे दी थी और उनकी गिरफ्तारी की आवश्यकता के पहलू पर तीन सवालों पर गहन विचार के लिए एक बड़ी पीठ को भेज दिया था। लेकिन, सीबीआई मामले में आरोपी होने के कारण वह अब भी न्यायिक हिरासत में हैं।

केजरीवाल को घोटाले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सबसे पहले ईडी ने 21 मार्च को मुख्यमंत्री आवास से गिरफ्तार किया था।

दलितों को उचित प्रतिनिधित्व न देने में भाजपा और आम आदमी पार्टी एकमत है- देवेन्द्र यादव

सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली नगर निगम में तीसरा वर्ष अनुसूतिच जाति/जनजाति के मेयर के लिए संविधान के अंतर्गत एमसीडी अधिनियम (धारा-35) में प्रावधान होने के बावजूद सत्तासीन आम आदमी पार्टी की मेयर शैली ऑबराय दलित पार्षद के अधिकार का हनन करके अवैध रुप से मेयर पद पर बनी हुई और आज निगम की स्थायी समिति और वार्ड कमेटियों के चुनाव में भी दलितों को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया है, जिसकी कांग्रेस पार्टी कड़ी आलोचना करती है।

यादव ने कहा कि वार्ड समितियों के चुनाव के परिणाम के बाद निर्वाचित हुए चेयरमैन और वाइस चेयरमैन में दलित पार्षद का प्रतिनिधित्व औसत प्रतिशत से बहुत कम है, जबकि आम आदमी पार्टी और भाजपा अपने चुनाव घोषणा पत्र में दलित उत्थान और दलितों को उचित प्रतिनिधित्व देने की बात करती है। पहली बार सत्ता में आने के बाद जब केजरीवाल के पार्षद अपनी ही पार्टी के दलित पार्षद को मेयर चुनने में असहमत है तो वो स्थायी समिति और वार्ड समितियों के चुनाव में कैसे दलित पार्षदों को कैसे वार्ड कमेटी सौंपेंगे।

यादव ने कहा कि मैं भाजपा से पूछना चाहता हूँ कि भाजपा ने स्थायी समिति और वार्ड कमेटियों के लिए कितने दलित पार्षदों को चैयरमेन और सदस्यों के लिए नामित किया था, जबकि सांसद योगेन्द्र चंदोलिया, जो निगम के मेयर रह चुके है, एक दलित सीट से सांसद होने के नाते दलितों की कोई बात नहीं करते। उन्होंने कहा कि भाजपा ने तीसरे साल लगातार शैली ऑबराय के मेयर पद पर आसीन रहने का विरोध क्यों नही किया जबकि तीसरे वर्ष में दलित मेयर बनना होता है। उन्होंने कहा कि दलित के अधिकारों को खत्म करने में भाजपा और आम आदमी पार्टी एकमत है। यह साबित हो चुका है कि दिल्ली के दलितों के विकास और अधिकारों के लिए भी दोनो राजनीतिक दलों ने कोई काम नहीं किया है। आप पार्टी और भाजपा दोनो एक ही सिक्के के दो पहलू है।

यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने हमेशा दलितों को उचित प्रतिनिधित्व दिया है और उनके अधिकारों की लड़ाई हमेशा लड़ती रही है। लोकसभा नेता प्रतिपक्ष, जनप्रिय नेता राहुल गांधी और आदरणीय कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में दलितों, पिछड़ों और वंचितों के न्याय की लड़ाई किसी से छिपी नही है। देवेन्द्र यादव ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ने लोकसभा, विधानसभा और निगम में सत्ता में रहते हुए दलितों को उचित प्रतिनिधित्व दिया है और वर्तमान में दिल्ली में दलित समुदाय के अधिकारों की रक्षा करने के लिए हर संभव लड़ाई लड़ रहे है।

संस्कारशाला: दो पोटली

एक बार भगवान ने जब इंसान की रचना की तो उसे दो पोटली दी। कहा एक पोटली को आगे की तरफ लटकाना और दूसरी को कंधे के पीछे पीठ पर। आदमी दोनों पोटलियां लेकर चल पड़ा।

हां, भगवान ने उसे ये भी कहा था कि आगे वाली पोटली पर नजर रखना पीछे वाली पर नहीं। समय बीतता गया। वह आदमी आगे वाली पोटली पर बराबर नजर रखता। आगे वाली पोटली में उसकी कमियां थीं और पीछे वाली में दुनिया की।

वे अपनी कमियां सुधारता गया और तरक्की करता गया। पीछे वाली पोटली को इसने नजरंदाज कर रखा था। एक दिन तालाब में नहाने के पश्चात, दोनों पोटलियां अदल बदल हो गई। आगे वाली पीछे और पीछे वाली आगे आ गई।

अब उसे दुनिया की कमियां ही कमियां नजर आने लगी। ये ठीक नहीं, वो ठीक नहीं। बच्चे ठीक नहीं, पड़ोसी बेकार है, सरकार निक्कमी है आदि-आदि। अब वह खुद के अलावा सब में कमियां ढूंढने लगा।

परिणाम ये हुआ कि कोई नहीं सुधरा, पर उसका पतन होने लगा। वह चक्कर में पड़ गया कि ये क्या हुआ है? वो वापस भगवान के पास गया। भगवान ने उसे समझाया कि जब तक तेरी नजर अपनी कमियों पर थी, तू तरक्की कर रहा था। जैसे ही तूने दूसरों में मीन-मेख निकालने शुरू कर दिए, वहीं से तेरा पतन शुरू हो गया।

शिक्षा

शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर, इस कहानी से सबसे महत्वपूर्ण सीख यह है कि हमें हमेशा अपनी कमियों पर ध्यान देना चाहिए, न कि दूसरों की गलतियों पर। जब हम अपनी कमियों को पहचानते हैं और उन्हें सुधारने का प्रयास करते हैं, तभी हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उन्नति कर सकते हैं। दूसरों में गलतियां ढूंढने से कुछ हासिल नहीं होता; बल्कि हमारा खुद का पतन होता है। इसलिए, एक अच्छे शिक्षक की तरह, हमें खुद को सुधारने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें। शिक्षक दिवस पर, यह सीख हमें आत्मनिरीक्षण और आत्मसुधार के महत्व की याद दिलाती है।

भगवान मिल सकते हैं, नौकरी नहीं: बढ़ती बेरोजगारी का भयावह सच -

" ख्वाब थे कुछ आँखों में, उम्मीदों का जहां था,
चाह थी मेहनत से, हर एक सपना हकीकत बना था।
मगर बेरोजगारी की आँधियों ने ऐसा जोर मारा,
की मंजिलों की रेत भी हाथों से फिसलता नज़र आया।"

आज का भारत, जो विश्व गुरु बनने का सपना देखता है, अब एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहाँ बेरोजगारी की दर ने चिंताजनक रूप ले लिया है। देश में एक आम धारणा बन गई है कि भगवान से मिलना शायद आसान हो गया हो, लेकिन नौकरी पाना अब बेहद कठिन हो गया है। बेरोजगारी की समस्या किसी से छिपी नहीं है, लेकिन जिस तरह से यह समस्या विकराल रूप ले रही है, वह न केवल चिंताजनक है बल्कि देश के भविष्य के लिए भी एक गंभीर खतरा बन गई है।

बेरोजगारी की बढ़ती समस्या:

बेरोजगारी का मसला कोई नया नहीं है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसकी गम्भीरता ने सभी को हिला कर रख दिया है। देश में बेरोजगारी दर का बढ़ना एक विकासशील देश के लिए ठीक नहीं है। विशेषकर युवाओं में बेरोजगारी की दर बहुत अधिक है। लाखों की संख्या में युवा हर साल उच्च शिक्षा प्राप्त कर निकलते हैं, लेकिन उन्हें उनकी शिक्षा के अनुरूप रोजगार नहीं मिल पाता।

देश में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति है। हमारे पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी आबादी है, और यह तेजी से बढ़ रही है। इस बड़ी जनसंख्या को रोजगार देना स्वाभाविक रूप से एक चुनौती है, लेकिन यह भी सच है कि यदि इस जनसंख्या का सही प्रबंधन किया जाए, तो इसे देश की विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में बदला जा सकता है।

सरकार की नीतियों की विफलता:

इस गंभीर समस्या का समाधान निकालने की जिम्मेदारी सरकार और नीति निर्माताओं की है। लेकिन, दुर्भाग्यवश, इस दिशा में अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। हर चुनाव में बेरोजगारी एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनता है, लेकिन चुनावों के बाद यह मुद्दा हाशिए पर चला जाता है। विपक्ष भी इस मुद्दे को बार-बार उठाता है, लेकिन इसे हल करने के लिए कोई ठोस प्रयास नहीं दिखाई देता।

सरकारी नौकरियों की भर्ती प्रक्रिया को लेकर भी स्थिति काफी गंभीर है। बहाली प्रक्रिया का समय पर न आना, भर्ती प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और पेपर लीक जैसी घटनाएँ बेरोजगारी की समस्या को और जटिल बना देती हैं। यह न केवल छात्रों के विश्वास को तोड़ता है, बल्कि एक बार फिर से उनके सपनों को चूर-चूर कर देता है।

सरकारी नौकरियों की कमी का सबसे बड़ा असर उन परिवारों पर पड़ता है जो अपनी आखिरी संपत्ति बेचकर अपने बच्चों की शिक्षा में निवेश करते हैं, इस उम्मीद में कि वे एक दिन सरकारी नौकरी प्राप्त करेंगे और परिवार का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा। लेकिन जब नौकरी की राह में ये सभी समस्याएँ आ जाती हैं, तो उस परिवार के लिए जीवन फिर से शून्य से शुरू करना एक बहुत बड़ा संघर्ष बन जाता है।

चीन से सीखने की जरूरत:

हमारे पड़ोसी देश चीन ने जिस तरह से अपनी विशाल जनसंख्या को एक संसाधन में तब्दील किया है, वह निश्चित रूप से सीखने योग्य है। एक समय था जब चीन भी हमारे जैसे ही समस्याओं का सामना कर रहा था। लेकिन उन्होंने अपने देश की जनसंख्या को अवसर के रूप में देखा और उसे अपने विकास में शामिल किया। आज, चीन न केवल एक विकसित राष्ट्र है, बल्कि एक समृद्ध देश भी है। उन्होंने अपने मानव संसाधन का सही उपयोग करते हुए अपने देश को आर्थिक और सामाजिक रूप से मजबूत किया है।

भारत में भी इस दिशा में काम करने की जरूरत है। जब आप अपनी जनसंख्या का सही उपयोग नहीं करते हैं, तो वही जनसंख्या एक अभिशाप बन जाती है। बेरोजगारी की समस्या से निपटने के लिए, सरकार को न केवल नौकरियाँ प्रदान करने पर ध्यान देना चाहिए, बल्कि युवाओं में कौशल विकास पर भी जोर देना चाहिए। कौशल विकास के माध्यम से ही हम अपने युवाओं को रोजगार के लिए तैयार कर सकते हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बना सकते हैं।

शिक्षा प्रणाली की कमजोरियाँ:

बेरोजगारी की इस विकराल समस्या का एक महत्वपूर्ण कारण हमारी शिक्षा प्रणाली की खामियाँ भी हैं। आज की शिक्षा प्रणाली केवल डिग्री प्रदान करने पर केंद्रित है, जबकि वास्तविक जीवन में उपयोगी कौशल का विकास नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप, हमारे युवा केवल सर्टिफिकेट के साथ बाहर निकलते हैं, लेकिन उनमें वह कौशल नहीं होता जो उन्हें रोजगार दिला सके।

हमारे देश के युवाओं में कौशल की भारी कमी है। बहुत कम युवा ऐसे हैं जिनमें डिग्री के साथ-साथ वास्तविक कौशल भी है। इस स्थिति को और बदतर बनाने में सोशल मीडिया और व्हाट्सएप जैसी प्लेटफार्मों का भी योगदान है। आज के युवा अपना अधिकांश समय इन प्लेटफार्मों पर बिताते हैं, जहां उन्हें गलत जानकारी और अफवाहें मिलती हैं। इन अफवाहों ने युवाओं के मन में निराशा और भ्रम फैलाया है, जिससे उनकी मानसिकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

इसके अलावा, हमारे देश में शिक्षा का व्यवसायीकरण हो गया है। निजी शिक्षण संस्थान छात्रों से अत्यधिक शुल्क वसूलते हैं, लेकिन उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में असफल रहते हैं। छात्रों को बड़ी रकम देकर भी वे उस स्तर की शिक्षा नहीं मिल पाती, जो उन्हें रोजगार दिलाने में सहायक हो। इस प्रकार, शिक्षा के क्षेत्र में सुधार की सख्त जरूरत है, ताकि हमारे युवा केवल डिग्रीधारी न बनें, बल्कि वे कौशल से परिपूर्ण हों और रोजगार के योग्य बन सकें।

बेरोजगारी और मानसिक स्वास्थ्य:

बेरोजगारी का एक और गहरा असर मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। जब एक युवा बार-बार असफल होता है, जब उसके सामने रोजगार के अवसर बंद हो जाते हैं, तो उसकी मानसिक स्थिति पर गहरा असर पड़ता है। निराशा, अवसाद, और आत्महत्या की प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगती हैं। यह एक गंभीर सामाजिक समस्या है, जो बेरोजगारी के साथ-साथ और भी जटिल हो जाती है।

आज के युवा न केवल बेरोजगारी से जूझ रहे हैं, बल्कि वे मानसिक रूप से भी बहुत अधिक दबाव का सामना कर रहे हैं। उन्हें अपने भविष्य की चिंता सताती है, वे खुद को असफल महसूस करते हैं, और इस दबाव से निकलने का रास्ता उन्हें नहीं सूझता। इस स्थिति में, समाज को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। हमें अपने युवाओं को मानसिक रूप से मजबूत बनाने के लिए उन्हें सहारा देना होगा, उन्हें प्रोत्साहित करना होगा, ताकि वे निराशा के इस दौर से बाहर निकल सकें।

सरकार की भूमिका:

सरकार को इस दिशा में सख्त कदम उठाने की जरूरत है। केवल नीतियाँ बनाना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन नीतियों को जमीनी स्तर पर लागू करना भी आवश्यक है। रोजगार के अवसर बढ़ाने के साथ-साथ, कौशल विकास और शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने की भी आवश्यकता है।

सरकार को देश के युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा में मोड़ने के लिए उन्हें सशक्त बनाना होगा। इसके लिए, रोजगार के नए अवसर पैदा करने, स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन देने, और युवाओं में उद्यमशीलता की भावना को बढ़ावा देने की दिशा में काम करना होगा। इसके अलावा, सरकारी नौकरियों की भर्ती प्रक्रिया में सुधार लाना भी आवश्यक है, ताकि यह प्रक्रिया पारदर्शी और समयबद्ध हो सके।

समाज की भूमिका:

बेरोजगारी की इस समस्या से निपटने में समाज की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। हमें अपने बच्चों को केवल डिग्री की दौड़ में नहीं डालना चाहिए, बल्कि उन्हें वास्तविक कौशल सिखाने पर ध्यान देना चाहिए। समाज को युवाओं को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे केवल सरकारी नौकरियों पर निर्भर न रहें, बल्कि खुद का रोजगार शुरू करने की दिशा में भी सोचें।

इसके अलावा, हमें सोशल मीडिया और अन्य प्लेटफार्मों पर फैल रही गलत जानकारियों से भी सावधान रहना होगा। युवाओं को इस बात का ज्ञान देना होगा कि वे किस प्रकार से अपनी ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग कर सकते हैं और कैसे वे अपने देश के विकास में योगदान दे सकते हैं।

बेरोजगारी की समस्या आज के भारत की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। यह न केवल आर्थिक रूप से, बल्कि सामाजिक और मानसिक रूप से भी हमारे देश को प्रभावित कर रही है। इसे हल करने के लिए सरकार, समाज, और युवाओं को एकजुट होकर काम करना होगा। हमें यह समझना होगा कि केवल नौकरियाँ प्रदान करना ही समाधान नहीं है, बल्कि हमें एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ हमारे युवा अपने कौशल के बल पर आत्मनिर्भर बन सकें।

भारत को विश्व गुरु बनने का सपना साकार करने के लिए, हमें अपनी जनसंख्या को संसाधन के रूप में बदलना होगा और बेरोजगारी की समस्या का स्थायी समाधान निकालना होगा। हमें अपने युवाओं को वह दिशा प्रदान करनी होगी, जिससे वे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें और देश को एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बना सके।

क्या हैं क्यूम्लोनिंबस बादल, जिन्होंने शहर को डुबोया; एक घंटे में 88 मिमी की मूसलाधार बारिश

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम के वजीराबाद में 88 एमएम और गुरुग्राम तहसील क्षेत्र में 62 एमएम वर्षा एक घंटे में हो गई। गुरुग्राम शहर में एक घंटे में ही 88 एमएम तक मूसलाधार वर्षा हो गई। क्यूम्लोनिंबस बादल होने से मध्यम से भारी वर्षा होने बार-बार बिजली कड़कने और तेज हवा के साथ भारी ओलावृष्टि जैसी घटनाएं होती हैं।

गुरुग्राम। क्यूम्लोनिंबस बादलों से गुरुग्राम में एक घंटे में ही 88 एमएम तक मूसलाधार वर्षा हो गई। एक घंटे में इतनी वर्षा सीजन में पहली बार हुई है। इससे पहले 11 अगस्त को वजीराबाद में 108 एमएम, गुरुग्राम में 70 एमएम और सोहना में 75 एमएम वर्षा हुई थी। लेकिन यह वर्षा रुक-रुककर हुई थी।

कृषि विज्ञान केंद्र शिकोहपुर (गुरुग्राम) के मौसम विषेशज्ञ डॉ. मंजीत के अनुसार क्यूम्लोनिंबस बादल होने से मध्यम से भारी वर्षा होने, बार-बार बिजली कड़कने और तेज हवा के साथ भारी ओलावृष्टि जैसी घटनाएं होती हैं। क्यूम्लोनिंबस बादल एक ही क्षेत्र में तेजी से बरसने लगते हैं और कुछ ही समय में बहुत ज्यादा वर्षा हो जाती है। लेकिन ऐसा कभी-कभार ही होता है।

दिल्ली-जयपुर हाईवे की सर्विस लेन जलभराव में डूब गई। इससे यहां पर वाहनों की आवाजाही प्रभावित हुई।

ऐसे बनते हैं क्यूम्लोनिंबस बादल

डॉ. मंजीत ने बताया कि इन बादलों के बनने का कारण ज्यादा गर्मी और वायुमंडल में नमी की मात्रा अधिक होना है। मंगलावार को गुरुग्राम में अधिकतम तापमान 35.0 डिग्री सेल्सियस और नमी की मात्रा सौ प्रतिशत थी। 70 से सौ प्रतिशत के बीच नमी की मात्रा होने तथा गर्मी के कारण क्यूम्लोनिंबस बादल घने होकर बरसने लगते हैं। इन दिनों मानसून धीमी गति से फिर से सक्रिय हुआ है, जिसके कारण प्रदेश के लगभग सभी जिलों में वर्षा हो रही है।

तहसील - कितनी वर्षा हुई (एमएम में)

गुरुग्राम- 62
कादीपुर- 61
हरसरू- 61
वजीराबाद- 88
बादशाहपुर- 55
सोहना- 70
मानेसर- 68
पटौदी- 7
फरुखनगर - 80

प्रदेश में आठ सितंबर तक होगी वर्षा

मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में आठ सितंबर तक हल्की से मध्यम दर्जे की वर्षा होने का अनुमान है। दक्षिण हरियाणा के गुरुग्राम, नूंह, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, पलवल में नौ और दस सितंबर तक वर्षा हो सकती है। इसके अलावा सोनीपत, रोहतक, झज्जर और पानीपत में भी इन दिनों हल्की से मध्यम दर्जे की वर्षा होने का अनुमान है। बता दें कि प्रदेश में 15 सितंबर तक मानसून का प्रभाव रहता है।

वर्षा ने धोया हवा का जहर

वर्षा होने बाद हवा सांस लेने लायक हो गई और एयर क्वालिटी इंडेक्स सुधर गया। गुरुग्राम में दिन में चार बजे एक्यूआई 54 दर्ज किया गया। पिछले लगभग दो महीने से हो रही वर्षा के कारण एक्यूआई सौ से नीचे दर्ज किया जा रहा है। 50 या इसके आसपास एक्यूआई की स्थिति स्वास्थ्य की दृष्टि से बेहतर मानी जाती है। इससे पहले 10 और 11 अगस्त को भी एक्यूआई 50 दर्ज किया गया था।

हरियाणा की जनता ने BJP पर किया भरोसा, पर बदले में मिला सिर्फ धोखा; पढ़िए क्या बोले सिसोदिया?

मनीष सिसोदिया ने बुधवार को रोड शो के दौरान बीजेपी पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता को अब ऐसी सरकार चाहिए जो स्कूलों की व्यवस्था सुधारे और अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ाएं। साथ ही बिजली के भारी भरकम बिलों से निजात दिलाए। पढ़िए आखिर रोड शो के दौरान मनीष सिसोदिया ने और क्या-क्या कहा ?

गन्नौर (सोनीपत)। दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने बुधवार को गन्नौर में रोड शो किया। रोड शो नगरपालिका रोड से शुरू हुआ और रेलवे रोड से होते हुए देवीलाल चौक पर जा कर संपन्न हुआ।

वहीं, रोड शो में हरियाणा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता व वरिष्ठ उपाध्यक्ष अनुराग ढांडा समेत काफी संख्या में आप कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस दौरान मनीष सिसोदिया ने कहा कि हरियाणा की जनता सभी को मौका देकर देख चुकी है। अब जनता बदलाव देखना चाहती है। हरियाणा अब ऐसी सरकार देखना चाहती है कि जो स्कूलों की व्यवस्था सुधारे, अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ाए, मोहल्ला क्लीनिक खुलवाए, बिजली के भारी भरकम बिलों से निजात दिलाए।

उन्होंने कहा कि दिल्ली प्रदेश की जनता ने हरियाणा के अरविंद केजरीवाल को मौका दिया तो उन्होंने अपने कार्याकाल में इतने शानदार सरकारी स्कूल बनवा दिए कि वहां के लोग अब निजी स्कूलों को छोड़ कर अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूलों में करवा रहे हैं।

बीजेपी ने रोजगार पर कोई काम नहीं किया

मनीष सिसोदियो अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ाई और जगह-जगह मोहल्ला क्लीनिक खुलवाए जिसका लोगों को लाभ मिल रहा है। अरविंद केजरीवाल ने बिजली बिल व रोजगार के मुद्दे पर भी काम करके दिखाया। उसी तर्ज पर आज पंजाब में सरकार काम कर रही है। वहीं प्रदेश की किसी भी सरकार ने स्कूल, अस्पताल और रोजगार पर कोई काम नहीं किया।

उन्होंने कहा कि हरियाणा ने बड़ी उम्मीद से भाजपा सरकार चुनी थी, लेकिन बदले में सिर्फ धोखा दिया। बीते 10 वर्षों में हरियाणा में स्कूल, नौकरियों और अस्पताल पर कोई काम नहीं किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जनता इस बार हरियाणा के लाल केजरीवाल को देखे। हरियाणा में आम आदमी की सरकार बनती है तो यहां भी दिल्ली व पंजाब की तर्ज पर काम करेगी।

इस मौके पर आप नेता देवेंद्र गौतम, ग्रामीण जिलाध्यक्ष महेंद्र छिक्कारा, सुनीता वाल्मिकी, मंजू कौशिक, सरोज बाला राठी, रणबीर छिक्कारा, विक्की खुराना, अंकुश त्यागी सहित अन्य भी मौजूद रहे।

भाजपा को हराने के लिए जो संभव होगा वह करेंगे

दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया ने हरियाणा में कांग्रेस के साथ गठबंधन पर कहा कि प्रदेश में भाजपा को हराने के लिए जो भी जरूरी होगा उस दिशा में कदम बढ़ाए जाएंगे। अरविंद केजरीवाल इस पर निर्णय लेंगे।

77 नंबर रेलवे फाटक रुई की मंडी पर आरओबी पुल बनाने के लिए एक रास्ता है, जिसके 5 फायदें है : सामाजिक चिंतक रघुनाथ सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

- ना तो किसी का मकान व दुकान टूटेगी और ना ही एक दिन के लिऐ भी रास्ता बंद होगा : सामाजिक चिंतक रघुनाथ सिंह,
- और ना हीं हजारों व्यापारियों के साथ लाखों ग़रीब परिवारों की रोजी रोटी पर कोई मुसीबत आएगी : सामाजिक चिंतक रघुनाथ सिंह
- अपने देश को विकसित भारत बनाने के लिए देश के हर जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य हैं कि उसे समस्या पर नहीं, उसके समाधान पर फोकस करना चाहिए : सामाजिक चिंतक रघुनाथ सिंह

आगरा, संजय साग़र सिंह। शाहगंज रुई की मंडी रेलवे फाटक मार्ग पर लंबे समय से आरओबी बनाने की मांग चली आ रही है, जिसे योगी सरकार ने मंजूरी दे दी है। अब जल्द ही इस आरओबी के लिए प्रक्रिया शुरू हो जाएगी, लेकिन रेलवे की ओर से रुई की मंडी का रेलवे फाटक बंद होने जा रहा है। रेलवे यहां आरओबी का निर्माण करा रही है, जिसके कारण लगभग दो साल तक यह रास्ता बंद हो जाएगा। इससे शाहगंज बाजार के 2 हजार से ज्यादा दुकानदार और उन दुकानों पर कार्य करने वाले 10 हजार से ज्यादा कर्मचारियों के साथ क्षेत्र के लाखों ग़रीब लोग की रोज़ी रोटी भी प्रभावित होने की संभावना हैं।

इस गम्भीर समस्या को प्राथमिकता के आधार पर समाधान करने की दिशा में कन्हैया कुंज अर्जुन नगर के रहने वाले 77 वर्षीय वरिष्ठ समाजसेवी एवं सामाजिक चिंतक रघुनाथ सिंह ने राष्ट्रहित में प्रयास शुरू किये और दो महीने लगातार पूरे क्षेत्र का बारीकी से स्थलीय निरीक्षण किया और रुई की मंडी फाटक पर रेलवे ओवरब्रिज निर्माण और लगभग 2 साल के लिए फाटक बंद होने से आने वाली गंभीर समस्याओं को समझते हुए समाधान की एक बहुत ही सरल युक्ति बताई और इस विषय के समाधान में महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किये।

उन्होंने कहा, अगर समस्या हैं तो उसका समाधान भी हैं। अपने देश को विकसित भारत बनाने के लिए देश के हर जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य हैं कि उसे समस्या पर नहीं, उसके समाधान पर फोकस करना चाहिए। रुई की मंडी फाटक पर रेलवे ओवरब्रिज निर्माण का विकास इस तरह हो की लाखों ग़रीब लोगों एवं व्यापारियों की रोजी-रोटी प्रभावित ना हो। 77 नंबर रेलवे फाटक रुई की मंडी पर आरओबी पुल बनाने के लिऐ एक रास्ता है, जिसके 5 फायदें है -

1. किसी का मकान व दुकान नही टूटेगी।
2. एक दिन के लिऐ भी रास्ता बंद नही होगा चाहे पुल बनाने में एक साल लग जाये पर रास्ता बन्द नही होगा।
3. इससे शाहगंज बाजार के लगभग 2 हजार से ज्यादा दुकानदार और उन दुकानों पर कार्य करने वाले लगभग 10 हजार से ज्यादा कर्मचारियों सहित क्षेत्र के लाखों ग़रीब लोग एक दिन के लिए भी प्रभावित नहीं होंगे।
4. उस जगह पर पुल भी बहुत कम समय में बन जाऐगा।
5. कम लागत में बन जाएगा।

श्री सिंह ने आगे कहा, हमारा सुझाव और समाधान अच्छा लगे तो विचार जरूर करियेगा। इससे ना तो 2 वर्ष के लिए रेलवे फाटक बंद करने की ज़रूरत पड़ेगी और ना हीं हजारों व्यापारियों के साथ लाखों ग़रीब परिवारों की रोजी-रोटी पर कोई मुसीबत आएगी और बारह खम्बा की तरफ से रूई की मण्डी मार्केट में खरीदारी हेतु जाने वाले लोगों को भी किसी भी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। बारह खम्बा रूई की मण्डी, अर्जुन नगर, अजीत नगर, ख्वासपुरा, नरीपुरा, धनौली, मलपुरा एवं जगनेर रोड पर अन्य दर्जनों बस्तियों के लोगों का भी प्रतिदिन आवागमन सुगमता के साथ होता रहेगा और शाहगंज बाजार से होकर हर रोज गुजरने वाले उन हजारों राहगीरों को भी किसी मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ेगा। जो देश-विदेश की यात्रा के लिए आगरा कैंट रेलवे स्टेशन और ईदगाह बस स्टैंड सुगमता से जाते हैं। वो भी बिना किसी दिक्क़त परेशानी के सुगमता से जाएंगे।

सबसे महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाएँ : विजय गर्ग

यदि आपको विज्ञान के प्रति आकर्षण है और आप इस बात में रुचि रखते हैं कि ब्रह्मांड कैसे काम करता है, तो आपको इस आकर्षण को बढ़ाने और वैज्ञानिक ज्ञान के अपने दायरे का विस्तार करने के तरीके खोजने चाहिए। अब, हम जानते हैं कि इंटरनेट आपको ढेर सारी 'वैज्ञानिक जानकारी' तक पहुंच प्रदान करता है जिसे आप साधारण गूगल खोज से प्राप्त कर सकते हैं। हालाँकि, हमें यह बताना चाहिए कि इनमें से बहुत सी 'वैज्ञानिक जानकारी' इन दावों का समर्थन करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और स्थापित प्रयोगों के बिना उपलब्ध कराई गई है। यही कारण है कि केवल उन वैज्ञानिक डेटा और अनुसंधान पर भरोसा करना आवश्यक है जो प्रतिष्ठित और भरोसेमंद संस्थानों, व्यक्तियों और प्रयोगशालाओं द्वारा किए गए हैं। दुनिया भर की नवीनतम वैज्ञानिक घटनाओं से खुद को अपडेट रखने का सबसे अच्छा तरीका विश्वसनीय वैज्ञानिक जानकारी के भरोसेमंद स्रोत का उपयोग करना है। हमने शीर्ष 10 सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय वैज्ञानिक पत्रिकाओं की एक सूची तैयार की है जो आपको नवीनतम खोजों, आविष्कारों, प्रयोगों और निष्कर्षों तक पहुंच प्रदान करेगी। इन पत्रिकाओं का आनंद कौन उठाएगा ? हमारी शीर्ष 10 सूची में शामिल पत्रिकाएं लंबे समय से मौजूद हैं और वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय द्वारा व्यापक रूप से सम्मानित हैं। चाहे आप केवल जिज्ञासु हों और विज्ञान के बारे में अधिक जानना चाहते हों या आप एक उभरते हुए वैज्ञानिक हों, ये पत्रिकाएँ आपको विशेषज्ञ जानकारी, सलाह और आँकड़े प्रदान करेंगी जो विज्ञान के बारे में आपके ज्ञान को एक नए स्तर पर ले जाएँगी। हमारी शीर्ष 10 सबसे महत्वपूर्ण और लोकप्रिय विज्ञान पत्रिकाओं को महत्व के किसी भी क्रम में स्थान नहीं दिया गया है। शॉर्टलिस्ट बनाने के लिए हमने जिन मानदंडों का उपयोग किया उनमें वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में उनकी प्रतिष्ठा, वे कितने वर्षों से हैं, उनकी सोशल मीडिया फॉलोइंग, वैज्ञानिक सामग्री का दायरा और गुणवत्ता और वैश्विक अपील शामिल हैं। नेशनल ज्योग्राफिक नेशनल जियोग्राफ़िक टीवी चैनल पर दुनिया भर से लाखों दर्शक हैं, जो पर्यावरण विज्ञान और पुराने और नए सभी चीज़ों की खोज को कवर करने वाले कुछ सबसे मंत्रमुग्ध कर देने वाले कार्यक्रमों को देखने के लिए दैनिक आधार पर आते हैं। नेशनल ज्योग्राफिक टीवी चैनल की लोकप्रियता ने निश्चित रूप से नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका की लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद की है और यही एक कारण है कि हमारी सूची में यह पहले स्थान पर है। पत्रिका की सामग्री भारी नहीं है और इसलिए विज्ञान में प्रवेश करने वालों के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। नेशनल ज्योग्राफिक अधिकतर प्राकृतिक विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता है और जिस दुनिया में हम रहते हैं, अंतरिक्ष, जानवरों और आविष्कारों के बारे में शानदार तस्वीरें और जानकारी प्रदान करता है। यह पत्रिका प्रिंट और डिजिटल दोनों रूपों में उपलब्ध है और इसे हर उम्र का व्यक्ति पढ़ सकता है। पत्रिका मासिक आधार पर जारी की जाती है और इसमें सदस्यता शुल्क होता है। यदि आप अपने बच्चों या पोते-पोतियों की विज्ञान में रुचि जगाना चाहते हैं, तो ऐसा करने का एक अच्छा तरीका उन्हें उपहार के रूप में नेशनल ज्योग्राफिक पत्रिका की सदस्यता देना है। पत्रिका खोजें यदि आप वैज्ञानिक ज्ञान और तथ्यों से थोड़ा परिचित होना चाहते हैं, तो अगला कदम निश्चित रूप से डिस्कवर मैगज़ीन है। यह पत्रिका 1980 के दशक से मौजूद है और सभी आधारों को कवर करने के लिए विभिन्न विज्ञानों पर ध्यान केंद्रित करती है। विभिन्न पत्रिका संस्करण विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के लिए समर्पित हैं, जिनमें गणित और भौतिकी, चिकित्सा और स्वास्थ्य, विकास, जीवन विज्ञान, आविष्कार और अंतरिक्ष शामिल हैं। डिस्कवर मैगज़ीन सभी उम्र के लोगों के लिए है और डिजिटल और प्रिंट दोनों रूपों में उपलब्ध है। हमारी राय में यह पत्रिका युवा वयस्कों और उससे ऊपर के लोगों के लिए सबसे उपयुक्त हैसामग्री भारी है. यदि आप किसी विशेष विषय पर शोध कर रहे हैं या सिर्फ अपने वैज्ञानिक ज्ञान का विस्तार करना चाहते हैं, तो आपको डिस्कवर की सदस्यता लेने के बारे में सोचना चाहिए। यदि आप निश्चित नहीं हैं कि डिस्कवर की सदस्यता लेनी चाहिए या नहीं, तो आप डिस्कवर वेबसाइट देख सकते हैं और कुछ मुफ्त लेख पढ़ सकते हैं जो भौतिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान को कवर करते हैं। गहन और अच्छी तरह से शोध किए गए लेख भी वेबसाइट पर मौजूद हैं लेकिन वे हर कुछ हफ़्ते में जारी किए जाते हैं। आप इन लेखों से अपनी वैज्ञानिक रुचि बढ़ा सकते हैं और फिर तय कर सकते हैं कि आप डिस्कवर की सदस्यता लेना चाहते हैं या नहीं। लोकप्रिय विज्ञान सूची में होना ही चाहिए क्योंकि यह सबसे पुरानी वैज्ञानिक पत्रिकाओं में से एक है जो अभी भी मजबूत हो रही है। लोकप्रिय विज्ञान 1872 से अस्तित्व में है और पिछले 148 वर्षों में इसमें काफी विकास हुआ है। इस पत्रिका में महिला अनुयायियों की तुलना में पुरुषों की संख्या अधिक है और इसका एक कारण यह है कि पत्रिका प्रौद्योगिकी, गैजेट्स, कारों और दीय वस्तुओं पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करती है। जबकि ये विषय प्रमुख हैं, पॉपुलर साइंस भी गहराई तक जाता है और डेटा हैकिंग, अंतरिक्ष, असाध्य रोगों के लिए जीन-आधारित उपचार खोजों और नवीनतम अत्याधुनिक अनुसंधान और प्रयोगों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है। पत्रिका प्रिंट और डिजिटल दोनों रूपों में उपलब्ध है। हम अपने पुरुष और महिला दोनों पाठकों के लिए इसकी अनुशंसा करते हैं क्योंकि यह विभिन्न विषयों पर प्रचुर मात्रा में जानकारी प्रदान करता है। यदि हमारी महिला पाठकों को लगता है कि यह पत्रिका बहुत अधिक पुरुष-उन्मुख हो सकती है, तो हमारा सुझाव है कि आप डिजिटल संस्करण देखें और कुछ लेख पढ़ें जिनमें आपकी रुचि हो, क्योंकि पॉपुलर साइंस पत्रिका की रूढ़िवादिता के कारण आप कुछ बेहतरीन जानकारी से वंचित हो सकते हैं। हाल के वर्षों में अनुभव किया गया। अमेरिकी वैज्ञानिक पत्रिका के नाम से आपको पता चलता है कि यह अमेरिकी बाजार पर केंद्रित है, लेकिन साइंटिफिक अमेरिकन उन लोगों के लिए उपयोगी है जो विज्ञान की दुनिया में नवीनतम अनुसंधान, आविष्कारों, खोजों और प्रयोगों के बारे में अधिक जानने के इच्छुक हैं। यह पत्रिका डिजिटल और प्रिंट दोनों रूपों में उपलब्ध है। हमारा मानना है कि यह पत्रिका उन लोगों के लिए उपयुक्त है जो विज्ञान से परिचित हैं और विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में अपने शोध या अध्ययन को आगे बढ़ाना चाहते हैं। यदि आप अभी शुरुआत कर रहे हैं, तो यहां मिलने वाली जानकारी और सामग्री थोड़ी भारी हो सकती है। हालाँकि, लेखक अपनी जानकारी और अंतर्दृष्टि को प्रस्तुत करने और तोड़ने में बहुत अच्छा काम करते हैं ताकि पाठकों के लिए इसे समझना आसान हो जाए। यदि आप सोच रहे हैं कि क्या आपको साइंटिफिक अमेरिका की सदस्यता लेनी चाहिए, तो हमारा सुझाव है कि आप उनकी ऑनलाइन वेबसाइट देखें और उनके ब्लॉग को देखने में थोड़ा समय व्यतीत करें जो बहुत जानकारीपूर्ण है। इससे आपको अंदाजा हो जाएगा कि आप पत्रिका में किस प्रकार के वैज्ञानिक विषय और सामग्री पाने की उम्मीद कर सकते हैं। स्मिथसोनियन यह एक और विज्ञान पत्रिका है जिसका बहुत मजबूत अमेरिकी प्रभाव है लेकिन यह विज्ञान और अनुसंधान से प्यार करने वाले किसी भी व्यक्ति का ध्यान आकर्षित करेगी। यह पत्रिका चित्रकला, साहित्य, इतिहास और विज्ञान से लेकर विभिन्न विषयों पर विस्तृत शोध पर बनाई गई है। यह पत्रिका उन व्यक्तियों के लिए बिल्कुल उपयुक्त है जिन्हें विस्तृत शोध तक पहुँच की आवश्यकता है। यदि आप एक आकस्मिक पाठक हैं, तो आपको यह पत्रिका थोड़ी भारी और विस्तृत लग सकती है। हालाँकि, पत्रिका में 'सर्वाधिक लोकप्रिय' अनुभाग सामान्य पाठक के लिए उपयुक्त होना चाहिए और उन्हें दिलचस्प जानकारी प्रदान करनी चाहिए जो उन्हें खाने की मेज पर सुपर-बुद्धिमान दिखाएगी। तो अगर आप देख रहे हैंजो एक ऐसी पत्रिका के लिए जो विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ विभिन्न विषयों पर विस्तृत शोध भी प्रदान करती है, स्मिथसोनियन आपके लिए बिल्कुल सही रहेगा। आप द स्मिथसोनियन की ऑनलाइन सदस्यता ले सकते हैं। वैज्ञानिक यदि आप वैज्ञानिक बनना चाह रहे हैं, तो आपको निश्चित रूप से द साइंटिस्ट मैगज़ीन की सदस्यता लेने के बारे में सोचना चाहिए। यदि आप पहले से ही एक वैज्ञानिक हैं लेकिन इस पत्रिका के बारे में कभी नहीं सुना है, तो यह जानने के लिए पढ़ें कि यह आपके लिए क्यों अवश्य पढ़ना चाहिए। जीवन विज्ञान पेशेवर इस पत्रिका का आनंद लेंगे जो सटीक, तथ्यात्मक और मनोरंजक वैज्ञानिक सामग्री प्रदान करने पर जोर देती है। विषय आणविक जीव विज्ञान, स्टेम सेल अध्ययन, आनुवंशिकी और जीवन विज्ञान की रुचियों की एक श्रृंखला से लेकर हैं। द साइंटिस्ट की टीम अत्यधिक योग्य है और पाठकों को दुनिया भर में अपनाई जा रही नवीनतम अनुसंधान विधियों, वैज्ञानिक खोजों, नवीनतम तकनीक और नवीन प्रक्रियाओं से अवगत कराती है। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि द साइंटिस्ट क्या है, तो ऑनलाइन वेबसाइट अवश्य देखें क्योंकि सप्ताह भर में कई लेख पोस्ट किए जाते हैं। साइंटिस्ट मैगज़ीन फेसबुक पेज भी दिलचस्प जानकारी प्रदान करता है और वर्तमान में इसके २ मिलियन से अधिक अनुयायी हैं। न्यू साइंटिस्ट पत्रिका इस पत्रिका की जड़ें यूनाइटेड किंगडम में हैं और यह 1956 से अस्तित्व में है। न्यू साइंटिस्ट खुद को दुनिया में सबसे लोकप्रिय साप्ताहिक विज्ञान और तकनीकी पत्रिका के रूप में प्रचारित करती है। यूके, ऑस्ट्रेलिया और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित दुनिया के कई हिस्सों में पत्रिका का प्रशंसक आधार बढ़ रहा है। पत्रिका ऑनलाइन और प्रिंट दोनों रूपों में उपलब्ध है। इस पत्रिका द्वारा संबोधित कुछ सामान्य विषयों में शामिल है कि मानव होना क्या है ? जीवन के प्रश्न और वैज्ञानिक उत्तर, नवीनतम वैज्ञानिक खोजें और उद्योग में नवीनतम वैज्ञानिक समाचार। न्यू साइंटिस्ट का ऑनलाइन संस्करण अवश्य देखें क्योंकि दैनिक आधार पर कई लेख पोस्ट किए जाते हैं जो आपको दुनिया भर में सबसे महत्वपूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान और सफलताओं से अपडेट रखते हैं। न्यू साइंटिस्ट मैगज़ीन का एक फलता-फूलता फेसबुक पेज है, जिसके ३.६ मिलियन से अधिक प्रशंसक हैं और ट्विटर पर ३ मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं। ब्रह्मांड पत्रिका यह हर चीज़ के विज्ञान पर ध्यान केंद्रित करता है और उन लोगों के लिए एकदम सही है जो विज्ञान के विशाल महासागर में अपने पैर भिगो रहे हैं और साथ ही उन कट्टर विज्ञान के शौकीनों के लिए भी। पत्रिका में मुख्य विज्ञान, स्वास्थ्य, प्रकृति, पृथ्वी, अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी और इतिहास से लेकर कई अलग-अलग विषयों को शामिल किया गया है। कॉसमॉस मैगज़ीन में हर किसी के लिए कुछ न कुछ है क्योंकि लेखक अपने ग्राहकों की बढ़ती सूची को आकर्षित करने के लिए हल्की और भारी सामग्री डालते हैं। कॉसमॉस मैगज़ीन की जड़ें ऑस्ट्रेलिया में हैं और यह २००५ से मौजूद है। आप मुफ़्त न्यूज़लेटर के लिए साइन अप कर सकते हैं या आगे बढ़कर पत्रिका की सदस्यता ले सकते हैं। कॉसमॉस पत्रिका ऑनलाइन ग्राहकों को अभिलेखागार में जाने और पुराने मुद्दों को खोजने का अवसर देगी जो उन्हें लंबे समय तक व्यस्त रखेगी। कॉसमॉस मैगज़ीन फ़ेसबुक पेज पर वर्तमान में 500,000 से अधिक फ़ॉलोअर्स हैं। लोकप्रिय यांत्रिकी यह पॉप-साइंस पत्रिका निश्चित रूप से पुरुष दर्शकों को पसंद करती है क्योंकि यह 'आपकी दुनिया कैसे काम करती है' पर केंद्रित है। इन विषयों में आउटडोर, प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और विज्ञान से संबंधित विषयों को शामिल करते हुए स्वयं करें विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। सामग्री उन पाठकों को आकर्षित करने के लिए हल्की और भारी दोनों हो सकती है, जो बहुत अधिक कुशल नहीं हैं और साथ ही वे जो दीया मॉडल को जल्दी से समझ सकते हैं। पत्रिका 1902 से अस्तित्व में है और प्रासंगिक एवं मांग में बने रहने के लिए इसका विकास जारी है। पत्रिका का यू.एस. संस्करण हैप्रति वर्ष केवल 10 संस्करण। पत्रिका अंग्रेजी और रूसी दोनों भाषाओं में उपलब्ध है। जो पाठक नवीनतम गैजेट, उपकरण, अंतरिक्ष और विमानन के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, उन्हें यह पत्रिका पसंद आएगी। पॉपुलर मैकेनिक्स ने 1986 और 2008 में राष्ट्रीय पत्रिका पुरस्कार जीता है। यदि आप पॉपुलर मैकेनिक्स के बारे में अधिक जानना चाहते हैं, तो इसकी वेबसाइट देखें क्योंकि दो पॉडकास्ट हैं जो पत्रिका द्वारा कवर किए गए विषयों पर अधिक प्रकाश डालते हैं। विज्ञान समाचार यह पत्रिका 1921 में स्थापित की गई थी और तब से यह दुनिया भर के पाठकों को विज्ञान, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी पर नवीनतम समाचार प्रदान करती रही है। पत्रिका को सदस्यता शुल्क की आवश्यकता होती है क्योंकि टैगलाइन यह स्पष्ट करती है कि भरोसेमंद पत्रकारिता की कीमत चुकानी पड़ती है। यह पत्रिका सभी पाठकों के लिए उपयुक्त है क्योंकि पत्रिका का फोकस पाठकों को विज्ञान के बारे में प्रेरित करना, सूचित करना और शिक्षित करना है। पत्रिका को प्रिंट और डिजिटल रूप में एक्सेस किया जा सकता है। यदि आप हाल के सप्ताहों में प्रकाशित कुछ विज्ञान समाचार देखना चाहते हैं, तो ऑनलाइन वेबसाइट देखें। आपको अंतरिक्ष, भौतिकी, पृथ्वी, जीवन और मानव जैसे विषयों पर ब्रेकिंग न्यूज़ मिलेगी। पत्रिका सोसायटी फॉर साइंस एंड द पब्लिक द्वारा प्रकाशित की जाती है और पत्रिका की वार्षिक सदस्यता पर आपको सोसायटी में १२ महीने की मुफ्त सदस्यता मिलती है। विज्ञान समाचार की वार्षिक सदस्यता आपको २२ मुद्दों तक पहुंच प्रदान करती है। एक मुफ़्त डिजिटल न्यूज़लेटर भी है जो आपके इनबॉक्स में भेजा जाता है और आपको नवीनतम वैज्ञानिक समाचारों की सुर्खियाँ और सारांश प्रदान करता है।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

- :सौजन्य :-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

रूमी दरवाजे के पास केवल चलेंगे इक्का-तांगा और ई-रिक्शा

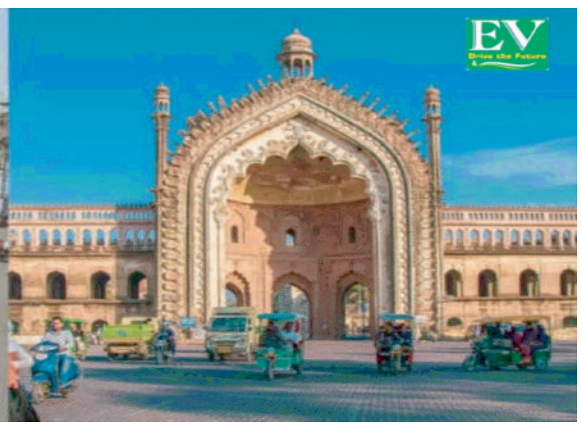

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ के कैसरबाग चौराहे को पूरी तरह से नो-पार्किंग जोन घोषित कर दिया गया है, जिसके बाद अब बी.एन. रोड पर निर्धारित पार्किंग स्थल पर लोग अपनी गाड़ियां खड़ी कर सकते हैं। वहीं हुसैनाबाद में रूमी दरवाजे के पास कॉबल स्टोन ट्रैक पर सिर्फ इक्का-तांगा व ई-रिक्शा ही चलेंगे। शेष वाहनों की आवाजाही के लिए वैकल्पिक मार्ग का प्रस्ताव रखा गया है।

एलडीए के पारिजात सभागार में मंगलवार, 03 सितंबर को मंडलायुक्त डॉ. रोशन जैकब की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस प्रस्ताव पर मुहर लगाई गई। इसके तहत एलडीए, नगर निगम, लेसा, परिवहन और लोक निर्माण विभाग की संयुक्त टीम पूरे रूट का सर्वे करेगी। इसके बाद वैकल्पिक रास्ता तय किया जाएगा।

बैठक में मंडलायुक्त ने कहा कि हुसैनाबाद में रूमी दरवाजे के आसपास सभी तरह के वाहनों की आवाजाही से ट्रैफिक का काफी लोड रहता है। इससे हेरिटेज जोन में पर्यटकों को दिक्कत होती है, जिसके कारण रूमी दरवाजे के आसपास कॉबल स्टोन ट्रैक पर सिर्फ इक्का-तांगा और ई-रिक्शा के संचालन की अनुमति दी जाएगी। इसके साथ बस और ऑटो-टेंपो स्टैंड भी दूर शिफ्ट करवाए जाएंगे। हेरिटेज जोन में सुंदरीकरण के साथ साइनेज भी लगाए जाएंगे।

फेस्टिव सीजन से पहले भारतीय बाजार में लॉन्च होंगी तीन इलेक्ट्रिक कार, मर्सिडीज से लेकर MG तक हैं शामिल

परिवहन विशेष न्यूज

वाहन निर्माताओं की ओर से फेस्टिव सीजन की शुरुआत होने से पहले नए वाहनों को पेश और लॉन्च किया जा रहा है। ICE के साथ इलेक्ट्रिक कारों को भी बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है। फेस्टिव सीजन के शुरू होने से पहले तीन नई EV को लॉन्च किया जाएगा। किस कंपनी की ओर से किस गाड़ी को लाने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में ग्राहक पारंपरिक ICE वाहनों के साथ ही Electric वाहनों को भी पसंद करने लगे हैं। ग्राहकों की पसंद को देखते हुए कंपनियों की ओर से कई नए इलेक्ट्रिक वाहनों को फेस्टिव सीजन के शुरू होने से पहले लाने की तैयारी की जा रही है। किस कंपनी की ओर से किस गाड़ी को बाजार में लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mercedes Benz EQS

मर्सिडीज बेंज की ओर से भारतीय बाजार में एक और इलेक्ट्रिक गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी की ओर से पांच सितंबर को आधिकारिक तौर पर नई इलेक्ट्रिक कार को लॉन्च कर दिया जाएगा। Mercedes Benz EQS 680 एसयूवी को करीब 600 किलोमीटर तक की रेंज के साथ लाया जा सकता है। यह मर्सिडीज की पहली मेबैक होगी जिसे इलेक्ट्रिक सेगमेंट में लाया जाएगा। इसकी संभावित कीमत 3.5 करोड़ रुपये हो सकती है।

MG Windsor EV

ब्रिटिश वाहन निर्माता JSW MG मोटर्स की ओर से भी 11 सितंबर को नई Electric गाड़ी लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। कंपनी इसे Intellegent CUV के तौर पर ला रही है। MG Windsor EV में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया जा सकता है, साथ ही इसमें 460 किलोमीटर तक की रेंज दी जा सकती है। लॉन्च के समय इसकी संभावित कीमत 17 से 20 लाख रुपये के आस-पास हो सकती है।

Kia EV9

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ मोटर्स की ओर से भी फेस्टिव सीजन के शुरू होने से पहले नई इलेक्ट्रिक गाड़ी को भारतीय बाजार में लाने की तैयारी की जा रही है। हालांकि अभी कंपनी की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है लेकिन उम्मीद है कि तीन अक्टूबर को Kia EV9 को भारत लाया जाएगा। इसमें 541 किलोमीटर तक की रेंज दी जा सकती है। बेहतरीन फीचर्स के साथ आने वाली इस गाड़ी की संभावित कीमत 80 लाख रुपये के आस-पास हो सकती है।

BYD M6

चीन की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता BYD की ओर से भी भारतीय बाजार में फेस्टिव सीजन के दौरान नई MPV को लाया जा सकता है। फिलहाल कंपनी की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की आधिकारित जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन सोशल मीडिया पर कुछ समय पहले एक फोटो को शेयर किया गया है, जिसमें गाड़ी की हेडलाइट के साथ Coming Soon लिखा हुआ है। जिसके बाद उम्मीद की जा रही है कि मौजूदा इलेक्ट्रिक एमपीवी E6 की जगह नई M6 को भारत लाया जाएगा। इसमें 530 किलोमीटर के आस-पास की रेंज मिल सकती है।

बिहार में बढ़ी इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री

परिवहन विशेष न्यूज

बिहार में इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री में तेजी से इजाफा हुआ है। केंद्र सरकार की रिपोर्ट में इसका खुलासा हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, बिहार के लोगों ने इस साल खूब इलेक्ट्रिक वाहन खरीदे हैं। लग्जरी वाहनों के प्रति आकर्षण काफी बढ़ा है। अगस्त महीने में पिछले साल के इसी महीने के मुकाबले सभी तरह के 10 हजार से ज्यादा वाहन बिके।

चार पहिया वाहनों के साथ-साथ तिपहिया वाहनों में भी लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है। इनकी वृद्धि करीब आठ हजार है। यात्री वाहनों में भी इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग बढ़ी है।

टेम्पो के मुकाबले ई-रिक्शा खरीदने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक सबसे दिलचस्प बात यह है कि इन दोनों की बिक्री में दोगुने से भी ज्यादा का अंतर है। पिछले साल यह अंतर करीब 100 फीसदी था, इस साल यह 104 फीसदी है।

रिपोर्ट बताती है कि पिछले साल अगस्त में 88,192 वाहन बिके थे। जबकि, पिछले साल इसी महीने में 78,466 वाहन ही बिके थे। कार और मोटरसाइकिल-स्कूटर के अलावा ट्रैक्टर, मोपेड, टेंपो, ई-रिक्शा की बिक्री भी बढ़ी है। सबसे खास बात यह है कि कृषि उपकरण के साथ वाहन खरीदने के प्रति भी लोगों का रुझान बढ़ा है। पिछले साल सिर्फ दो हार्वेस्टर बिके थे जबकि इस साल अगस्त में सात हार्वेस्टर बिके हैं।

इस साल आठ में से सात महीनों में वाहनों की बिक्री पिछले सात महीनों के मुकाबले बढ़ी है। सिर्फ़ मई महीने में ही वाहनों की बिक्री 2023 के मुकाबले ज़्यादा रही। इस साल के बाकी सात महीनों में वाहनों की बिक्री काफ़ी ज़्यादा रही है। यह बढ़ोतरी वाहनों के हर सेगमेंट में देखने को मिली है।

मारुति दे रही Ignis से Ciaz पर बचत का मौका, Jimny पर भी मिल रहा लाखों का डिस्काउंट

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख कार निर्माता Maruti Suzuki की ओर से प्रीमियम डीलरशिप Nexa पर ऑफर की जाने वाली कारों और एसयूवी पर September 2024 esa लाखों रुपये की बचत का मौका दिया जा रहा है। कंपनी की ओर से Ignis से लेकर Ciaz तक हजारों रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। किस गाड़ी पर कितना डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki अपनी Nexa डीलरशिप के जरिए कई प्रीमियम कारों और एसयूवी को ऑफर करती है। इस महीने मारुति की किस प्रीमियम गाड़ी को खरीदने पर किस तरह का Discount Offer दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Jimny

मारुति की ऑफ रोडिंग एसयूवी Jimny को अगर आप September 2024 में खरीदते हैं तो इस पर करीब 2.50 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। कंपनी की ओर से इस गाड़ी पर सबसे ज्यादा ऑफर दिया जा रहा है। यह ऑफर एसयूवी के टॉप वेरिएंट Alpha पर दिया जा रहा है। वहीं Zeta वेरिएंट पर कंपनी 1.95 लाख रुपये तक के ऑफर दे रही है।

Maruti Grand Vitara

मारुति की ओर से ग्रैंड विटारा की भी नेक्सा डीलरशिप के जरिए बिक्री की जाती है। कंपनी इस एसयूवी पर भी September 2024 में 1.28 लाख रुपये के डिस्काउंट ऑफर दे रही है। यह ऑफर इसके स्ट्रॉन्ग हाइब्रिड वर्जन पर दिया जा रहा है। इसके अलावा एसयूवी के माइल्ड हाइब्रिड पर 73 हजार रुपये और सीएनजी वेरिएंट पर 33 हजार रुपये तक के ऑफर्स दिए जा रहे हैं।

Maruti Baleno

मारुति की प्रीमियम हैचबैक को इस महीने खरीदना आपके लिए फायदेमंद साबित हो सकता है। इस गाड़ी पर September 2024 में 52 हजार रुपये तक के ऑफर्स मिल रहे हैं। यह डिस्काउंट बलेनो के ऑटोमैटिक वर्जन पर मिल रहा है। मैनुअल ट्रांसमिशन वाली बलेनो पर 47100 रुपये और सीएनजी पर 37100 रुपये बचाए जा सकते हैं।

Maruti XL6

मारुति की XL6 एमपीवी के पेट्रोल वेरिएंट पर इस महीने 35 हजार रुपये और सीएनजी पर 25 हजार रुपये की बचत का मौका मिल रहा है।

Maruti Ciaz

मारुति की ओर से मिड साइज सेडान कार के तौर पर सियाज को ऑफर किया जाता है। September 2024 में इस गाड़ी पर कंपनी 45 हजार रुपये के ऑफर दे रही है। जिसमें 20 हजार रुपये का कैश डिस्काउंट और 25 हजार रुपये का एक्सचेंज बोनस शामिल है।

Maruti Ignis

नेक्सा डीलरशिप पर इग्निस को सबसे सस्ती गाड़ी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस महीने इस गाड़ी को खरीदने पर 53100 रुपये बचाए जा सकते हैं। यह ऑफर इसके ऑटोमैटिक वेरिएंट्स पर है। मैनुअल ट्रांसमिशन वाली इग्निस के सिग्मा पर भी 53100 रुपये, डेल्टा, जेटा और एल्फा के मैनुअल वेरिएंट्स पर 48100 रुपये के ऑफर्स मिल रहे हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार देगी 20 लाख तक की सब्सिडी, लेकिन शामिल हैं शर्तें

परिवहन विशेष न्यूज

यूपी में इलेक्ट्रिक वाहन खरीदने वालों को सब्सिडी मिलने का रास्ता साफ हो गया है। यूपी परिवहन विभाग ने अपना पोर्टल शुरू कर दिया है। सब्सिडी सिर्फ उन्हीं वाहन मालिकों को मिलेगी जो ऑनलाइन आवेदन करेंगे। इसका लाभ 50 हजार से ज्यादा वाहन मालिकों को मिलेगा। इलेक्ट्रिक वाहनों पर सब्सिडी पाने के लिए उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रिक वाहन खरीद सब्सिडी पोर्टल upevsubsidy.in पर आवेदन करना होगा।

सब्सिडी एक ही वाहन पर दी जाएगी। यह खरीद सब्सिडी एग्रीगेटर्स/फ्लीट ऑपरेटर्स को अधिकतम दस दोपहिया या चार पहिया वाहन और अधिकतम पांच ई-बस या ई-फ्रेट कैरियर की खरीद पर दी जाएगी। जुलाई में सरकार ने ईवी खरीदारों को सब्सिडी देने का आदेश जारी किया था, अब पोर्टल फिर से खोल दिया गया है।

सहायक परिवहन आयुक्त नरेश कुमार ने बताया कि इलेक्ट्रिक वाहन खरीदते समय ग्राहकों को सब्सिडी के लिए आवेदन करना होगा। ग्राहक का फोटो, आधार कार्ड और बैंक खाता अनिवार्य है। डीलर के यहां से ही आवेदन करना होगा।

इलेक्ट्रिक वाहनों में सिर्फ ई-रिक्शा को सब्सिडी नहीं मिलेगी। वजह यह है कि ईवी को बढ़ावा देने के लिए सब्सिडी दी जा रही है, जबकि ई-रिक्शा बिना प्रचार के इतनी बड़ी संख्या में बिक चुके हैं कि वे परिवहन विभाग के लिए समस्या बन गए हैं।

इन वाहनों को मिलेगी सब्सिडी वाहन सब्सिडी
दोपहिया – पांच हजार
चार पहिया – एक लाख
ई-बस गैर सरकारी – बीस लाख
ई-गुड्स कैरियर – एक लाख

मेरठ की पुलिस से नाराज ई-रिक्शा चालक ने किया आत्मदाह का प्रयास

परिवहन विशेष न्यूज

मेरठ में कमिश्नरी चौक से चोरी हुई ई-रिक्शा की तलाश में इधर-उधर दौड़ रहे अर्जुन की हिम्मत सिविल लाइन थाने के एक सिपाही की उखड़ी भाषा ने तोड़ दी। पुलिस के इस व्यवहार से आक्रोशित हुए ई-रिक्शा चालक ने जान देने के इरादे से अपने ऊपर पेट्रोल छिड़क लिया। गनीमत रही कि समय रहते मीडिया और पुलिसकर्मियों ने उसे बचा लिया। इसके बाद हरकत में आई पुलिस पीड़ति को साथ लेकर सीसीटीवी खंगालती रही। हालांकि अभी तक ई-रिक्शा का कोई सुराग नहीं लग पाया है। चालक के साथ उसकी पत्नी और चार साल का बेटा भी दिनभर कमिश्नरी चौक पर धरना दिए बैठे रहे।

मलियाना के शक्ति नगर निवासी बीकॉम पास अर्जुन ई-रिक्शा चलाकर अपने परिवार का पालन पोषण करता है। सोमवार को उसकी रिक्शा कचहरी के पास से चोरी हो गई। पीड़ति ने सिविल लाइन थाने जाकर इसकी रिपोर्ट भी दर्ज करा दी थी। पुलिस ने उस समय तो कोई कार्रवाई नहीं की थी। मंगलवार को अर्जुन अपनी पत्नी रागिनी और चार साल के बेटे के साथ सिविल लाइन थाने पहुंचा था। उसका कहना था कि सीसीटीवी कैमरे देखे जाएं तो चोर का पता लगाने में काफी मदद मिल सकती है।

आरोप है कि ड्यूटी पर तैनात एक पुलिसकर्मी ने उससे उखड़ी भाषा में बात करते हुए बोल दिया कि पुलिस के पास उसकी रिक्शा ढूंढने के बजाए और भी काम है। पुलिसकर्मी के मुंह से ऐसी जली-भुनी बातें सुनकर ताव में आया अर्जुन अपनी पत्नी और बेटे को कमिश्नरी चौक पर बैठाकर चला गया। कुछ देर बाद चौक पर लौटा तो उसके हाथ में पेट्रोल से भरी बोतल थी। अर्जुन ने चोरी हुई ई-रिक्शा ना मिलने के कारण आत्मदाह की बात कहते हुए पेट्रोल अपने ऊपर छिड़क लिया। यह नजारा देखकर वहां मौजूद मीडिया और पुलिस कर्मी दौड़कर गए और उसके हाथों से बोतल छीन ली।

जैसे-तैसे पकड़कर उसे एक किनारे लाया गया। आत्मदाह की कोशिश की खबर मिलते ही सिविल लाइन थाना पुलिस में हड़कंप मच गया। कुछ देर में ही दरोगा और पुलिसकर्मी उसे लेकर सीसीटीवी खंगालने में जुट गए। हालांकि देर शाम तक उसकी ई-रिक्शा का कोई पता नहीं चल सका। चालक

अर्जुन और उसकी पत्नी रागिनी का कहना था कि ई-रिक्शा ही उनकी आय का एकमात्र स्रोत थी। दूसरा उन्हें माह वार उसकी किश्त भी चुकानी है।

ई-रिक्शा चालक अर्जुन के साथ यह पहली घटना नहीं है। चार साल पहले उसकी बाइक भी चोरी हो गई थी। जिसका अभी तक कोई पता नहीं चला है। टीपी नगर थाने में अर्जुन ने उसकी एफआईआर भी दर्ज कराई थी। चोरी की यह बाइक लगातार सड़क पर कोई दौड़ा रहा है, क्योंकि दो बार उसका चालान हो चुका है। कार्रवाई के डर से अर्जुन चालान भर भी चुका है। दूसरी बार वाहन चोरी के मामले में उसका पुलिस से आमना-सामना हुआ है।

विज्ञापन में करियर विकल्प

विजय गर्ग

एक विज्ञापन फ़ोटोग्राफ़र मार्केटिंग अभियानों में अपने फ़ोटोग्राफ़ी कौशल का उपयोग करने के लिए विज्ञापन एजेंसी के साथ काम करता है। यह ग्राहक की मांग पर निर्भर करता है कि आप किसी उत्पाद, स्थान, मॉडल या भवन का फोटो खींचेंगे। मार्केटिंग में उपयोग की जाने वाली तस्वीरें दिलचस्प होने के साथ-साथ ध्यान खींचने वाली भी होनी चाहिए। वर्तमान समय में ऑनलाइन शॉपिंग बहुत आम बात है। लोग प्रोडक्ट की फोटो देखकर ही प्रोडक्ट ऑर्डर कर देते हैं।

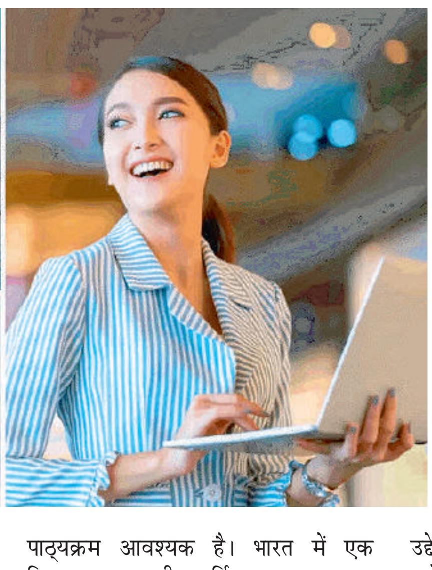

व्यवसाय में विज्ञापन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आजकल मार्केटिंग पूरी तरह से विज्ञापनों पर निर्भर हो गई है। विज्ञापन ग्राहकों को कंपनी द्वारा पेश किए गए उत्पादों को खरीदने के लिए मनाने की कला है। यह जनसंचार की अवधारणाओं में से एक है। विज्ञापन क्षेत्र में करियर ग्लैमरस होने के साथ-साथ काफी प्रतिस्पर्धी भी है क्योंकि हर दिन अधिक से अधिक एजेंसियां खुल रही हैं। विज्ञापन के विभिन्न माध्यम हैं जैसे इंटरनेट, टीवी, रेडियो, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और होर्डिंग्स। यह मांग पैदा करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है; विपणन प्रणाली को बढ़ावा देना और आर्थिक विकास को बढ़ाना। विज्ञापन में नौकरी के अवसर और करियर की संभावनाएँ विज्ञापन जगत में अपना करियर बनाने के लिए कई विकल्प हैं। आपके कौशल के आधार पर इस उद्योग में स्टार्टअप के लिए आपके पास कई विकल्प हैं। नौकरी पेशा को मुख्यतः दो प्रकारों में वर्गीकृत किया गया हैः रचनात्मक नौकरियाँः रचनात्मक नौकरियों में विभिन्न पेशे शामिल होते हैं। ये ऐसे काम हैं जो पूरी तरह से रचनात्मकता पर निर्भर हैं। कॉपीराइटरः कॉपीराइटर की मुख्य भूमिका विज्ञापन लिखना और विज्ञापनों के विज़ुअलाइज़ेशन के लिए रचनात्मक नारे, शब्द और ऑडियो स्क्रिप्ट बनाना है। एक विज्ञापन कॉपीराइटर को अत्यधिक रचनात्मक और कल्पनाशील होना चाहिए। अच्छे लेखन कौशल की भी आवश्यकता है। इसके अलावा, सभी विज्ञापन तकनीकों में गहरी रुचि रखें। कॉपीराइटर का काम अलग-अलग क्लाइंट के हिसाब से अलग-अलग होता है, क्लाइंट की मांग के अनुसार उन्हें उस विषय पर काम करना होता है। कॉपीराइटर बनने के लिए आपको संचार, अंग्रेजी या पत्रकारिता में स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होगी। भारत में एक कॉपीराइटर का औसत वार्षिक वेतन लगभग 2,98,315 रुपये है। **ग्राफ़िक डिज़ाइनरः** ग्राफ़िक डिज़ाइनर का मुख्य उद्देश्य विज्ञापनों के लिए डिज़ाइन तैयार करना है। डिज़ाइन इस तरह से है कि यह क्लाइंट के संदेश को उच्च दृश्य प्रभाव के साथ दर्शकों तक पहुंचाता है। आजकल अधिकांश डिज़ाइनिंग कार्य विभिन्न ग्राफ़िक डिज़ाइनिंग प्रोग्रामों की सहायता से कंप्यूटर पर किया जाता है। एक ग्राफिक डिजाइनर में मजबूत कंप्यूटर स्किल के साथ-साथ मजबूत विजुअल सेंस भी होना चाहिए। इसके अलावा, ग्राफिक्स और टाइपोग्राफी में रुचि आवश्यक है। ग्राफिक डिजाइनरों को क्वार्क एक्सप्रेस, फ्रीहैंड, इलस्ट्रेटर, फोटोशॉप, 3डी स्टूडियो मैक्स, एक्रोबैट, डायरेक्टर, ड्रीमवीवर और फ्लैश जैसे विभिन्न कार्यक्रमों का उपयोग करने में सक्षम होना चाहिए। एक पेशेवर ग्राफिक डिजाइनर बनने के लिए ललित कला, ग्राफिक कला या अन्य दृश्य कला से संबंधित विषयों में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। भारत में ग्राफिक डिजाइनर का औसत वार्षिक वेतन लगभग 6,00,000 रुपये है। **फ़ोटोग्राफ़रः** एक विज्ञापन फ़ोटोग्राफ़र मार्केटिंग अभियानों में अपने फ़ोटोग्राफ़ी कौशल का उपयोग करने के लिए विज्ञापन एजेंसी के साथ काम करता है। यह ग्राहक की मांग पर निर्भर करता है कि आप किसी उत्पाद, स्थान, मॉडल या भवन का फोटो खींचेंगे। मार्केटिंग में उपयोग की जाने वाली तस्वीरें दिलचस्प होने के साथ-साथ ध्यान खींचने वाली भी होनी चाहिए। वर्तमान समय में ऑनलाइन शॉपिंग बहुत आम बात है। लोग प्रोडक्ट की फोटो देखकर ही प्रोडक्ट ऑर्डर कर देते हैं। इस प्रकार फोटोग्राफी विज्ञापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मार्केटिंग फोटोग्राफर बनने के लिए कैमरे का उचित ज्ञान बहुत जरूरी है। आप फोटोग्राफी से संबंधित सभी तकनीकी कौशल से परिचित हैं। साथ ही, विज्ञापन उद्योग में पेशेवर फोटोग्राफर बनने के लिए फोटोग्राफी या उससे संबंधित स्नातक की डिग्री आवश्यक है। एक विज्ञापन एजेंसी में एक फोटोग्राफर की औसत वार्षिक आय लगभग 6,00,000 रुपये है। **विज़ुअलाइज़रः** एक विज़ुअलाइज़र चित्रों, छवियों, लिखित पाठ को ग्राफिक विज़ुअल में बदल देता हैआकर्षक और समझने में आसान हैं। छवियों को विज़ुअलाइज़र द्वारा बढ़ाया जाता है और विशेष प्रभावों को जोड़ा जाता है। ग्राफ़िक्स 2-आयामी, 3-आयामी या 4-आयामी हो सकते हैं। एक पेशेवर विज़ुअलाइज़र के पास महान डिज़ाइन रचनात्मकता होनी चाहिए। इसके अलावा, डिजाइन में स्नातक की डिग्री या अन्य समकक्ष पाठ्यक्रम आवश्यक है। भारत में एक विज़ुअलाइज़र की वार्षिक आय लगभग 3,00,000 रुपये है। **टाइपोग्राफरः** आम तौर पर, टाइपोग्राफी प्रकार को व्यवस्थित करने और डिजाइन करने की कला और तकनीक है। यह प्रचार सामग्री और विज्ञापन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उपयोग अक्सर पाठकों का ध्यान किसी विशेष विज्ञापन की ओर आकर्षित करने के लिए किया जाता है। तो यह एक टाइपोग्राफर का काम है। इस व्यवसाय के लिए, आपको ग्राफिक डिज़ाइन या संबंधित क्षेत्र में एसोसिएट की डिग्री हासिल करनी होगी। इस व्यवसाय के लिए औसत वार्षिक वेतन लगभग 4,00,000 रुपये है। कार्यकारी नौकरियाँः विज्ञापन में कार्यकारी नौकरियों में विभिन्न पेशे शामिल होते हैं। ये नौकरियाँ प्रबंधन कार्य पर आधारित होती हैं। **ग्राहक सेवा कार्यकारीः** ग्राहक सेवा अधिकारी बाहरी ग्राहकों और उनके संगठन के आंतरिक विभाग के बीच बिचौलिए के रूप में कार्य करते हैं। वे फोन, ईमेल आदि पर ग्राहकों से बातचीत करके उनकी समस्याओं से निपटते हैं। उनका मुख्य लक्ष्य ग्राहक को अपनी कंपनी के उत्पाद या सेवा से संतुष्ट करना है। वे विज्ञापन अभियानों की निगरानी करते हैं और ग्राहक की बिक्री बढ़ाने के लिए नए विचार विकसित करते हैं। ग्राहक सेवा कार्यकारी के रूप में काम करने के लिए विभिन्न कौशलों की आवश्यकता होती है जैसे अच्छे प्रबंधन कौशल, विश्लेषणात्मक दिमाग के साथ अच्छी निर्णय लेने की शक्ति। क्लाइंट सर्विसिंग एक्जीक्यूटिव के रूप में काम करने के लिए वित्त, अर्थशास्त्र, विज्ञापन, वित्त या व्यवसाय में स्नातक की डिग्री की आवश्यकता होती है। इस पद का सालाना सैलरी पैकेज करीब 2,40,000 रुपये है. **बाज़ार अनुसंधान विश्लेषकः** बाज़ार अनुसंधान विश्लेषक उपभोक्ताओं और अन्य प्रतिस्पर्धियों पर डेटा एकत्र करता है और उसका विश्लेषण करता है। विश्लेषक की मुख्य भूमिका बाजार की स्थितियों की जांच करना और उत्पाद की बिक्री बढ़ाने में मदद करना है। वे लोगों की ज़रूरतों, ग्राहक क्या चाहते हैं और किस कीमत पर चाहते हैं, इसका विश्लेषण करते हैं और इन मुद्दों पर कंपनी की मदद करते हैं। एक विश्लेषक के रूप में काम करने के लिए एक विश्लेषक के पास आँकड़ों के पैटर्न को नोटिस करने की क्षमता होनी चाहिए, साथ ही विवरण पर सटीकता और ध्यान होना चाहिए। ग्राहकों की ज़रूरत को समझना कि वे अन्य प्रतिस्पर्धियों की तुलना में आपकी कंपनी को क्यों चुनते हैं और आवश्यक सेवा प्रदान करते हैं, विश्लेषक का उद्देश्य है। इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए मार्केट रिसर्च या संबंधित क्षेत्र में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। एक विश्लेषक का सालाना औसत वेतन लगभग 3,51,000 रुपये है। **मीडिया नियोजन/अनुसंधान विश्लेषकः** नियोजन विभाग की मुख्य भूमिका उस समय शुरू होती है जब विज्ञापन का काम पूरा हो जाता है। वे समाचार पत्र, टीवी, रेडियो, पत्रिकाओं और अन्य विज्ञापन स्रोतों में योजना, शेड्यूलिंग, समय और स्थान के लिए जिम्मेदार हैं। इस विभाग का लक्ष्य बजट में विज्ञापन को दर्शकों तक पहुंचाना है। इस पद के लिए प्रसारण और मीडिया या संबंधित क्षेत्र में स्नातक की डिग्री आवश्यक है। इस स्ट्रीम में वार्षिक आय लगभग 5,00,000 रुपये है। **विज्ञापन खाता प्रबंधकः** विज्ञापन खाता प्रबंधक विज्ञापन के संबंध में लागत अनुमान तैयार करता है और ग्राहक को विज्ञापन विचार भी प्रस्तुत करता है। वे यह सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार हैं कि कंपनी ग्राहक की ज़रूरतों को पूरा करती है या नहीं। दरअसल, वे ग्राहक और संगठन के बीच पुल की तरह हैं। उन्हें खाता प्रबंधन के भीतर की समस्याओं का समाधान करना होगाटी टीम और आंतरिक और बाह्य संचार का प्रबंधन करें और परियोजना को अंत तक चलाएं। विज्ञापन खाता प्रबंधक बनने के लिए विज्ञापन में स्नातक की डिग्री या इसके समकक्ष डिग्री आवश्यक है। अकाउंट मैनेजर का सालाना सैलरी पैकेज लगभग 5,50,000 रुपये है. आजकल व्यवसाय का प्रभाव बढ़ाने के लिए विज्ञापन आवश्यक है। इसलिए, इस लाइन में काम करना युवाओं के लिए एक अच्छा विकल्प है क्योंकि समय के साथ यह क्षेत्र विकसित हो रहा है। साथ ही, इस क्षेत्र में करियर चुनने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं।

शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

संपादकीय

नए नजरिए की जरूरत : विजय गर्ग

अगर महिलाओं के दुख-सुख और उसकी व्यवस्था पर केंद्रित बातचीत हो रही हो तो उसके बीच में किसी के मुंह से अक्सर यह सुना जा सकता है कि एक औरत ही औरत की दुश्मन होती है। जो इस मसले की तहों से दूर रहते हैं, वे सहमत होते हैं, जो इसकी परतों को समझते हैं, उनके लिए इससे सहमत होना मुश्किल होता है। दरअसल, एक स्त्री जो पाती है, वही ज्ञान संस्कार अपनी बेटी, बहू या अन्य लड़कियों को देती है। आज के दौर में जब आमतौर पर हर लड़की और महिला को अपने हाथ में बसे इंटरनेट के माध्यम से घर, बाहर और संसार की सारी खबरें मिल रही हैं, ऐसे में अगर कोई महिला यह कहती है कि मुझे आजकल की लड़कियों से डर लगने लगा है, तो हैरानी होती है। अपने बेटे के लिए पुत्रवधू खोजते हुए क परिचित ने कहा कि आजकल की लड़कियों से जरा डर लगता है... आजकल की लड़कियां बहुत चालाक होती हैं... वे लड़के से सारा पैसा लेकर अपने पास रखती हैं।

इस तरह की बातें सुन कर एकबारगी ऐसा लगता है कि उन्हें किसी एकाध खास लड़की से कोई नाराजगी होगी, इसलिए वे ऐसा कह रही हैं, मगर विडंबना यह है कि यह राय उनकी सोच से जुड़ी थी। क्या वास्तव में आज के दौर की एक पढ़ी-लिखी जिम्मेदार महिला को थोड़ी-सी प्राप्त आजादी से सपने देखने वाली लड़कियों के बारे में ऐसी सोच रखना ठीक है? इस तरह की बातें जब पुरुषों के मुंह से निकले तो इस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

जब भी किसी की सत्ता में कोई घुसपैठ करता है तो उसे कष्ट होता है। मगर जब एक पढ़ी-लिखी स्त्री बार- बार ऐसे विचारों को दोहराती तो इस पर सोचने की जरूरत महसूस होती है। महादेवी वर्मा इस बात पर बल देती हैं कि एक पढ़ी-लिखी महिला को हमेशा अपनी अनपढ़ बहनों का साथ देना चाहिए, ताकि अन्य महिलाएं भी आगे बढ़ सकें। अगर सावित्रीबाई फुले ने भी यही सोचा होता तो क्या आधी आबादी जो आज पढ़-लिखकर अपने घरों से निकल पा रही है, निकल पाती ? शायद नहीं। दरअसल, हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। अगर ध्यान से देखा जाए तो एक पहलू अगर आज के दौर में लड़कियों का घर से बाहर निकलने का संघर्ष है, तो दूसरा पहलू उन स्त्रियों की सोच का है जो यह माने बैठी हैं कि स्त्रियों के घर से बाहर निकलने की आजादी ने गृहस्थ जीवन को बर्बाद कर दिया है। इसे कुछ यों भी देख सकते हैं कि वे स्त्रियां जो घर के बाहर काम कर रही है, वे घर में काम करने वाली स्त्रियों के सामने चुनौती हैं।

हमने बचपन से सुन रखा है कि एक उम्र के बाद लड़कियों को घर संभालने का काम सीख लेना चाहिए, क्योंकि लड़कियों को दूसरे के घर जाना है। आजादी के पचहत्तर साल बाद भी हमारा समाज इस सोच से मुक्त नहीं हुआ है। आज भी हम लड़कों की जगह तुलना में लड़कियों को घर का काम सिखाने में ज्यादा ध्यान देते हैं। परिणामस्वरूप कामकाजी महिलाएं घर और बाहर, दोनों को संभालने की पूरी कोशिश करती हैं, ताकि उनके ऊपर यह इल्जाम न आए कि नौकरी कर रही हैं, तो घर को छोड़ दिया है। एक बड़ी समस्या स्त्रियों के लिए सोशल मीडिया भी है। सोशल मीडिया महिलाओं को सर्वगुण संपन्न नारी की छवि से मुक्त नहीं होने दे रहा है। ऐसे में पुरुष प्रधान समाज को अगर आसानी से सर्वगुण संपन्नता के रोग से ग्रस्त आधी आबादी मिल जाए तो किसका दोष है। जब स्थितियों की इतनी मांग हो तो ऐसे में स्त्रियों को स्वयं को साबित करने के लिए ज्यादा परिश्रम करना पड़ता है। ऐसे में तुर्रा यह कि इतना करने के बाद भी यह सुनना पड़ता है कि आजकल की लड़कियां ज्यादा चालाक हो गई हैं... भोले-भाले लड़कों को फंसा लेती हैं। कई दफा तो ऐसा लगता है कि जो माताएं अपने पुत्रों से अतिरिक्त प्रेम करती हैं और उन्हें अपने और अपने लड़कों के भोलेपन पर इतना नाज है, उन्हें एहतियातन बच्चों को विवाह के लिए ही मना कर देना चाहिए। खुद जब रोटी - दाल पकाने लगेंगे तो औरतों की दोहरे दबाव में घिरी जिंदगी का दर्द समझ में आ जाएगा।

एक समस्या और भी है। आज के समय की स्त्रियां दो स्तर पर कार्य कर रही हैं। एक कि वे स्वयं को साबित करने में लगी हैं, दूसरी कि वे अपनी आजादी को भी जीना चाहती हैं। इन दोनों दबावों से निजी जिंदगी में विरोधाभास पैदा होना स्वभाविक ही है। यह विरोधाभास और भी प्रबल तब हो जाता है जब आज के समय में सबको पढ़ी-लिखी आधुनिक बहू और पत्नी तो चाहिए, मगर वह उसकी आजादी को एक सीमा में ही बांध कर रखना चाहता है। ऐसे में अक्सर लोग मुट्ठी भर स्त्रियों का उदाहरण प्रस्तुत करके हर महिला की आजादी को एक ही पैमाने पर तौल देते हैं। समस्या यह है कि जब यहां एक घर से दूसरे घर में आजादी के मायने बदल जाते हैं तो इतने सारे सामाजिक वर्गीकरण में सभी महिलाओं की आजादी को हम एक ही चश्मे से कैसे देख सकते हैं! ऐसे में आज पुरानी पीढ़ी की महिलाओं को अपने घर की नई पीढ़ी की महिलाओं के लिए नए नजरिए की जरूरत है।

सेवानिवृत प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के फायदे और नुकसान यूपीएससीः परीक्षा की तैयारी के भविष्य को नेविगेट करना : विजय गर्ग

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) सिविल सेवाओं के कठोर क्षेत्र सहित जीवन के हर पहलू में क्रांति ला रहा है। चूंकि यूपीएससी के अभ्यर्थी अपने पाठ्यक्रम की विशालता से जूझ रहे हैं, एआई की भूमिका वरदान और अभिशाप दोनों है। वे उत्सुक हैंः क्या एआई वास्तव में उनकी तैयारी में गेम-चेंजर हो सकता है? व्यक्तिगत अध्ययन योजनाओं से लेकर स्मार्ट एनालिटिक्स तक, एआई में उम्मीदवारों की तैयारी को बदलने की क्षमता है। लेकिन यह सब गुलाबी नहीं है; विचार करने के लिए कुछ नुकसान और नैतिक दुविधाएँ हैं। इस लेख में, वे यूपीएससी की तैयारी के संदर्भ में एआई के पेशेवरों और विपक्षों पर प्रकाश डालेंगे और इस बात पर प्रकाश डालेंगे कि यह सीखने के भविष्य को कैसे नया आकार दे रहा है। यूपीएससी की तैयारी में एआई के फायदे यूपीएससी की तैयारी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का एकीकरण कई फायदे प्रदान करता है जो उम्मीदवारों के अध्ययन के तरीके में क्रांतिकारी बदलाव लाता है। एआई के साथ, व्यक्तिगत शिक्षा एक वास्तविकता बन गई है। उम्मीदवारों को अब एक आकार-सभी के लिए फिट दृष्टिकोण का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, एआई एल्गोरिदम व्यक्तिगत प्रदर्शन का विश्लेषण करते हैं और उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए कस्टम अध्ययन कार्यक्रम बनाते हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता होती है। तैयारी की यह लक्षित पद्धति यह सुनिश्चित करती है कि समय कुशलतापूर्वक व्यतीत हो, और जहां यह सबसे अधिक मायने रखता है वहां छात्रों की तैयारी मजबूत हो। एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ वास्तविक समय की प्रतिक्रिया तक पहुंच है। एआई सिस्टम तुरंत अभ्यास परीक्षणों पर विश्लेषण प्रदान कर सकता है, न केवल यह अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कौन से प्रश्न छूट गए थे, बल्कि वे क्यों छूट गए थे। यह तत्काल प्रतिक्रिया उम्मीदवारों को मौके पर ही अपनी गलतियों से सीखने और तदनुसार अपनी रणनीतियों को अपनाने की अनुमति देती है। इसके अलावा, यह तत्काल सुधार तंत्र अवधारणाओं को अधिक प्रभावी ढंग से बनाए रखने में मदद करता है, क्योंकि फीडबैक लूप पारंपरिक तरीकों की तुलना में बहुत तेज है। एआई सीखने के संसाधनों की गहराई और पहुंच में भी बहुत बड़ा योगदान देता है। एआई-संचालित प्लेटफार्मों में बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने और वर्गीकृत करने की क्षमता है, जिससे छात्रों के लिए उनके पाठ्यक्रम के लिए प्रासंगिक नवीनतम जानकारी और शोध सामग्री तक पहुंच संभव हो जाती है। यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षार्थी अभिभूत न हों बल्कि उन्हें सबसे प्रासंगिक जानकारी प्रदान की जाए। यूपीएससी की तैयारी पर एआई का प्रभाव स्मार्ट एनालिटिक्स के विकास तक फैला हुआ है। ये विश्लेषण प्रश्नों के रुझान और परीक्षा में आने वाले विभिन्न विषयों की संभावना का अनुमान लगाने में मदद करते हैं। वे उम्मीदवारों को न केवल पिछले पेपरों बल्कि यूपीएससी परीक्षा की विकसित प्रकृति के आधार पर पूर्वानुमानित मॉडल के अनुसार अपने अध्ययन फोकस को प्राथमिकता देने में सक्षम बनाते हैं। पुनरीक्षण में दक्षता का पता एआई के उपयोग से भी लगाया जा सकता है। किसी छात्र की सीखने की प्रक्रिया में पैटर्न की पहचान करके, एआई एप्लिकेशन कमजोर क्षेत्रों पर दोहराए जाने वाले अभ्यास, बेहतर याद रखने के लिए अंतराल पर दोहराव और जटिल अवधारणाओं के लिए दृश्य सहायता या इंटरैक्टिव सत्र जैसे सामग्री वितरण के विभिन्न रूपों का सुझाव दे सकते हैं। एआई की क्षमताओं का उपयोग करते हुए, यूपीएससी उम्मीदवार ऐसे उपकरणों से लैस हैं जो अधिक प्रभावी, आकर्षक और अनुरूप तैयारी यात्रा को बढ़ावा देते हैं। उद्योग के लगातार विकसित होने के साथ, प्रौद्योगिकी और सिविल सेवा की तैयारी का यह अंतर्संबंध यूपीएससी उम्मीदवार की चुनौतीपूर्ण यात्रा का समर्थन करने के लिए और भी अधिक नवीन समाधानों को जन्म देने के लिए तैयार है। वैयक्तिकृत अध्ययन योजनाएँ व्यक्तिगत अध्ययन योजनाएं व्यक्तिगत उम्मीदवारों की अनूठी सीखने की शैलियों और गति को संबोधित करके यूपीएससी की तैयारी में क्रांति ला रही हैं। वे यह देखकर उत्साहित हैं कि एआई एल्गोरिदम प्रत्येक छात्र के प्रदर्शन का विश्लेषण करता है,एक अनुरूप अध्ययन कार्यक्रम तैयार करने की ताकत और कमजोरियां। यह दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है जिन पर अतिरिक्त ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे उनकी समग्र तैयारी रणनीति में वृद्धि होती है। एआई-संचालित अध्ययन योजनाओं में उपयोग की जाने वाली अनुकूली शिक्षण तकनीक यह पहचान सकती है कि कोई छात्र किसी विषय में कब महारत हासिल करता है। यह योजना को स्वयं को समायोजित करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि अभ्यर्थी अपना समय कुशलतापूर्वक व्यतीत करें। ये स्मार्ट अध्ययन कार्यक्रम, वर्तमान मामलों से लेकर जटिल मात्रात्मक योग्यता तक, उम्मीदवारों की बढ़ती जरूरतों के अनुकूल विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर कर सकते हैं। छात्र अपनी प्रगति और यूपीएससी परीक्षा के बदलते रुझानों के आधार पर अपनी अध्ययन योजनाओं के वास्तविक समय के अपडेट से लाभ उठा सकते हैं। उन्हें अपनी अध्ययन दिनचर्या का पुनर्मूल्यांकन और पुनर्गठन करने में समय बर्बाद नहीं करना पड़ता है; एआई उनके लिए यह करता है। यह एक गतिशील सीखने की यात्रा प्रस्तुत करता है जहां सफलता का मार्ग उनके सीखने की अवस्था से मेल खाने के लिए लगातार विकसित होता है। इसके अतिरिक्त, एआई-जनरेटेड अध्ययन योजनाएं वीडियो, लेख और क्विज़ जैसी विभिन्न शिक्षण सामग्रियों को शामिल कर सकती हैं, जिससे एक आकर्षक और इंटरैक्टिव अध्ययन अनुभव तैयार हो सकता है। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र न केवल जानकारी सीखें बल्कि महत्वपूर्ण सोच कौशल भी विकसित करें, जो यूपीएससी परीक्षाओं से निपटने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन परिष्कृत प्रणालियों के साथ, यूपीएससी उम्मीदवार सामान्य अध्ययन कार्यक्रम को अलविदा कह सकते हैं। वे अब एक ऐसे भविष्य को अपना सकते हैं जहां उनकी तैयारी उनकी आकांक्षाओं की तरह अनूठी होगी, जो उन्हें आत्मविश्वास और सटीकता के साथ भारत की सबसे कठिन परीक्षाओं में से एक का सामना करने के लिए सशक्त बनाएगी। जैसे-जैसे उनके सीखने के व्यवहार के बारे में डेटा एकत्र किया जा रहा है, इन व्यक्तिगत अध्ययन योजनाओं की प्रभावशीलता में सुधार होने की संभावना है। प्रदर्शन ट्रैकिंग के लिए स्मार्ट एनालिटिक्स यूपीएससी की तैयारी में एआई का समावेश स्मार्ट एनालिटिक्स को सामने लाता है, जो एक महत्वपूर्ण विशेषता है जो प्रदर्शन ट्रैकिंग में क्रांतिकारी बदलाव लाती है। पारंपरिक मूल्यांकन विधियों पर भरोसा करने के बजाय, एआई उन्नत एल्गोरिदम को एकीकृत करता है जो यूपीएससी उम्मीदवार के प्रदर्शन का बारीकी से विश्लेषण करता है। प्रति प्रश्न सही उत्तरों की संख्या से लेकर लगने वाले समय तक, एआई परीक्षण के हर पहलू की गहराई से जांच करता है। यह परिष्कृत विश्लेषण केवल सही और गलत उत्तरों की मात्रा निर्धारित करने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। एआई प्लेटफॉर्म किसी छात्र की तैयारी में पैटर्न की पहचान कर सकते हैं, सुधार की आवश्यकता वाले विशिष्ट क्षेत्रों को इंगित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र लगातार पर्यावरण से संबंधित प्रश्नों से जूझता है, तो एआई प्रणाली न केवल कमजोरी को उजागर करती है, बल्कि ज्ञान के अंतर को पाटने के लिए अनुरूप सामग्री की भी सिफारिश करती है। वास्तविक समय प्रतिक्रियाः तत्काल प्रदर्शन अंतर्दृष्टि छात्रों को जल्दी और कुशलता से समायोजन करने की अनुमति देती है। पूर्वानुमानित विश्लेषणः डेटा पैटर्न का उपयोग संभावित परीक्षा प्रश्नों का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है, जो सबसे प्रासंगिक विषयों पर छात्र की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करता है। समय के साथ प्रगतिः छात्र यह ट्रैक कर सकते हैं कि विभिन्न विषयों पर उनकी पकड़ कैसे बेहतर होती है, जिससे यह स्पष्ट तस्वीर मिलती है कि वे अपनी तैयारी यात्रा में कहां खड़े हैं। यूपीएससी के उम्मीदवारों को विशेष रूप से एआई-सक्षम प्लेटफार्मों द्वारा प्रदान किए गए सहज ज्ञान युक्त डैशबोर्ड से लाभ होता है। ये डैशबोर्ड जटिल डेटा को सुलभ प्रारूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे छात्रों के लिए अपनी प्रगति को समझना और प्रेरित रहना आसान हो जाता है। इसके अलावा, एआई का उपयोग किसी भी सचेत या अचेतन पूर्वाग्रह को समाप्त कर देता है जो आत्म-मूल्यांकन में आ सकता है, जो समय के साथ छात्र की क्षमताओं और सुधार के बारे में एक तटस्थ, उद्देश्यपूर्ण दृष्टिकोण प्रदान करता है। स्मार्ट एनालिटिक्स की शक्ति केवल जानकारी प्रस्तुत करने में नहीं है, बल्कि इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि में भी है। छात्र इसका लाभ उठा सकते हैंउनकी अध्ययन योजना को निरंतर अनुकूलित करने, कमजोर विषयों के प्रति उनके दृष्टिकोण को परिष्कृत करने और उनके समय प्रबंधन कौशल में सुधार करने के लिए विस्तृत प्रतिक्रिया। जैसे-जैसे डेटा बढ़ता है, एआई सिस्टम सीखते हैं और अनुकूलित होते हैं, जो एक आकांक्षी के सीखने की अवस्था के अद्वितीय उतार-चढ़ाव के अनुरूप अधिक सटीक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उन्नत अध्ययन सामग्री अनुशंसा यूपीएससी उम्मीदवारों के लिए अध्ययन सामग्री को निजीकृत करना एक और महत्वपूर्ण लाभ है जो एआई सामने लाता है। यूपीएससी में शामिल पाठ्यक्रम की विशाल मात्रा चुनौतीपूर्ण हो सकती है। इसके लिए अभ्यर्थी को न केवल समझने की आवश्यकता है, बल्कि विविध विषयों की जानकारी की एक विशाल श्रृंखला को बनाए रखने की भी आवश्यकता है। प्रक्रिया में एआई को एकीकृत करके, छात्रों को अध्ययन सामग्री के लिए अनुरूप सिफारिशें प्राप्त होती हैं जो उनकी सीखने की शैली और ज्ञान अंतराल के लिए सबसे उपयुक्त होती हैं। एआई-संचालित प्लेटफ़ॉर्म प्रत्येक उम्मीदवार के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक लेखों, पुस्तकों और वीडियो का चयन करते हुए, संसाधनों के महासागर को छानने के लिए परिष्कृत एल्गोरिदम का लाभ उठाते हैं। इससे न केवल समय की बचत होती है बल्कि यह सुनिश्चित होता है कि शिक्षार्थी सबसे उपयुक्त सामग्री का अध्ययन कर रहे हैं। उन्हें अब अपनी पसंद के बारे में दोबारा अनुमान लगाने की ज़रूरत नहीं है, जिससे उन्हें केवल अपनी तैयारी पर ध्यान केंद्रित करने का मौका मिलेगा। एआई-क्यूरेटेड अध्ययन सामग्री के प्रमुख लाभों में शामिल हैंः दक्षताः AI संसाधनों की खोज में लगने वाले समय को काफी कम कर देता है। प्रासंगिकताः सामग्री छात्र के वर्तमान स्तर और परीक्षा आवश्यकताओं से मेल खाती है। जुड़ावः इंटरैक्टिव और विविध प्रारूप अध्ययन प्रक्रिया को दिलचस्प बनाए रखते हैं। एआई द्वारा एकत्र किया गया डेटा अध्ययन सामग्री के साथ छात्र की बातचीत में छिपे पैटर्न को उजागर करने में भी मदद करता है। यदि कोई छात्र किसी विशेष विषय पर बहुत अधिक समय बिता रहा है, तो यह एक कठिनाई का संकेत दे सकता है, जो सिस्टम को वैकल्पिक संसाधनों या विभिन्न स्पष्टीकरणों की सिफारिश करने के लिए प्रेरित कर सकता है। स्मार्ट एनालिटिक्स यह मूल्यांकन करके अनुशंसा प्रक्रियाओं को और परिष्कृत करता है कि कौन सी सामग्री छात्र के प्रदर्शन के संदर्भ में सर्वोत्तम परिणाम देती है। फीडबैक और समायोजन का यह निरंतर चक्र सीखने के अनुभव को अविश्वसनीय रूप से गतिशील और व्यक्ति की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनाता है। यह सिर्फ सही सामग्री का चयन करने के बारे में नहीं है, बल्कि इसे इस तरह से प्रस्तुत करने के बारे में भी है जो सबसे अधिक फायदेमंद हो। कुछ छात्र इन्फोग्राफिक्स या वीडियो व्याख्यान जैसे दृश्यों के माध्यम से बेहतर सीख सकते हैं, जबकि अन्य गहन पठन सामग्री या इंटरैक्टिव सिमुलेशन पसंद कर सकते हैं। एआई इन प्राथमिकताओं को पहचानने और अध्ययन सामग्री को तदनुसार अनुकूलित करने में माहिर है। जैसे-जैसे अध्ययन की आदतें विकसित होती हैं और अधिक डेटा उपलब्ध होता है, एआई और मशीन लर्निंग अनुशंसा प्रक्रिया को परिष्कृत करना जारी रखते हैं, जिससे छात्रों की तैयारी हमेशा एक कदम आगे रहती है। प्रौद्योगिकी की अपनी सिफारिशों को अनुकूलित करने और अद्यतन करने की क्षमता का मतलब है कि शिक्षार्थी हमेशा नवीनतम और सबसे प्रभावी अध्ययन सामग्री के साथ तैयार रहते हैं। समय बचाने वाली और कुशल अध्ययन तकनीकें यूपीएससी की तैयारी में एआई के असाधारण अनुप्रयोगों में से एक अध्ययन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने में इसकी भूमिका है। सूचनाओं के ढेरों को छानने के बजाय, एआई सिस्टम सामग्री को व्यवस्थित करता है, जिससे उम्मीदवारों को क्या पढ़ना है इसकी योजना बनाने के बजाय अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाया जाता है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से यूपीएससी उम्मीदवारों के लिए फायदेमंद है, जिनके पास अक्सर समय की कमी होती है और उन्हें एक विशाल पाठ्यक्रम को कवर करना होता है। वैयक्तिकृत एआई ट्यूटर उम्मीदवार की विशिष्ट सीखने की जरूरतों को संबोधित करके दक्षता बढ़ाते हैं। वे उन क्षेत्रों को इंगित करते हैं जहां एक छात्र संघर्ष कर सकता है और तदनुसार अध्ययन सामग्री को अनुकूलित करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई छात्र भारतीय राजनीति में लगातार खराब प्रदर्शन करता है, तो एआई ऐसा करेगाछात्र के प्रदर्शन में सुधार होने तक उस क्षेत्र में अधिक संसाधन आवंटित करें और प्रश्नों का अभ्यास करें। ये एआई-संचालित प्लेटफ़ॉर्म अक्सर समय-ट्रैकिंग टूल को एकीकृत करते हैं जो सख्त अध्ययन कार्यक्रम का पालन करने में सहायता करते हैं। वे छात्रों को आगामी सत्रों के बारे में याद दिलाते हैं और प्रत्येक विषय पर बिताए गए समय का ट्रैक रखते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी विषयों को पर्याप्त रूप से कवर किया गया है। लक्ष्य एक इष्टतम अध्ययन व्यवस्था बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना है जो अनावश्यक समय व्यय को कम करते हुए सीखने को अधिकतम करता है। एनालिटिक्स की शक्ति के माध्यम से, एआई प्लेटफ़ॉर्म ऐसी सामग्री को चिह्नित करते हैं जो अत्यधिक समय लेती है। वे छात्रों को निष्क्रिय पढ़ने के विपरीत अधिक प्रभावी अध्ययन विधियों, जैसे इंटरैक्टिव क्विज़ या फ्लैशकार्ड की ओर मार्गदर्शन करते हैं, जो उतना प्रभावी नहीं हो सकता है। इसके अलावा, स्पीच-टू-टेक्स्ट और स्वचालित नोट-टेकिंग जैसी सुविधाएं अध्ययन सामग्री की तेजी से समीक्षा करने में सहायता करती हैं, जिससे प्रक्रिया न केवल तेज हो जाती है बल्कि अधिक गहन हो जाती है। इसके अलावा, मशीन लर्निंग एल्गोरिदम समय के साथ अध्ययन अनुशंसाओं को परिष्कृत करते हैं। जैसे ही कोई छात्र मंच के साथ इंटरैक्ट करता है, सिस्टम सीखता है कि किस प्रकार की सामग्री उस व्यक्ति के लिए सर्वोत्तम परिणाम देती है। चाहे वह वीडियो ट्यूटोरियल, विस्तृत इन्फोग्राफिक्स, या यूपीएससी प्रारूप की नकल करने वाले अभ्यास परीक्षण हों, एआई यह सुनिश्चित करता है कि छात्र की तैयारी किट उनके सीखने की अवस्था के साथ विकसित हो। इस प्रकार अध्ययन तकनीकों में एआई का समावेश न केवल समय बचाता है बल्कि छात्रों को यूपीएससी की तैयारी के लिए अधिक कुशल और सुव्यवस्थित दृष्टिकोण की ओर भी प्रेरित करता है। बचाया गया प्रत्येक मिनट पुनरीक्षण, समझ को गहरा करने या सुयोग्य आराम के लिए अर्जित एक मिनट है, जो सबसे कठिन प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में से एक में सफलता प्राप्त करने के लिए अपरिहार्य है। यूपीएससी की तैयारी में एआई के नुकसान हालांकि एआई ने यूपीएससी की तैयारी के परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया है, लेकिन चुनौतियां और सीमाएं भी हैं। एआई-संचालित प्रणालियों पर अत्यधिक निर्भरता संभावित रूप से उम्मीदवारों की स्वतंत्र रूप से सोचने और काम करने की क्षमता पर अंकुश लगा सकती है। छात्र व्यक्तिगत सहायता पर बहुत अधिक निर्भर हो सकते हैं, जिससे उन्हें उन परिदृश्यों में संघर्ष करना पड़ सकता है जहां सहज और सहज सोच की आवश्यकता होती है। आख़िरकार, यूपीएससी परीक्षा किसी व्यक्ति की अप्रत्याशित समस्याओं से सहजता से निपटने की क्षमता को महत्व देती है। एक अन्य महत्वपूर्ण चिंता गोपनीयता और डेटा सुरक्षा है। व्यक्तिगत अध्ययन योजनाओं और अंतर्दृष्टि को तैयार करने के लिए एआई प्लेटफार्मों को व्यक्तिगत डेटा की आवश्यकता होती है। ऐसी संवेदनशील जानकारी के संचय से कमजोरियाँ पैदा हो सकती हैं जहाँ किसी छात्र के व्यक्तिगत और प्रदर्शन डेटा को अनधिकृत पहुँच या उल्लंघन का खतरा हो सकता है। एआई की प्रभावशीलता उपलब्ध डेटा की गुणवत्ता और मात्रा पर भी निर्भर है। कुछ उदाहरणों में, किसी छात्र के सीखने के पैटर्न को पूरी तरह से समझने के लिए अपर्याप्त डेटा हो सकता है या जानकारी में ही पूर्वाग्रह हो सकते हैं। एआई सिस्टम केवल उतने ही अच्छे हैं जितना उनमें डाला गया डेटा, और यदि डेटा विषम या सीमित है, तो निष्कर्ष और सिफारिशें छात्र के लिए सटीक या फायदेमंद नहीं हो सकती हैं। एआई एल्गोरिदम में तकनीकी गड़बड़ियां और त्रुटियां कभी-कभी सीखने में असफलताओं का कारण बन सकती हैं। यदि कोई एआई ट्यूटर गलत काम करता है या गलत जानकारी प्रदान करता है, तो इससे न केवल भ्रम पैदा हो सकता है, बल्कि ज्ञान में भी कमी आ सकती है, जो यूपीएससी जैसी उच्च जोखिम वाली परीक्षाओं के दौरान हानिकारक हो सकता है।.... **शेष अगले अंक में**

मुकेश अंबानी की रिलायंस भी उठाएगी PLI का लाभ, ACC बैट्री का करेगी निर्माण

परिवहन विशेष न्यूज

मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाले रिलायंस इंडस्ट्रीज समूह का चयन प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम के तहत 10 गीगावाट-ऑवर (जीडब्ल्यूएच) क्षमता वाले एडवांस्ड केमेस्ट्री सेल (एसीसी) बैट्री मैन्युक्चरिंग के लिए किया है। मंत्रालय के मुताबिक गुणवत्ता व लागत मैकेनिज्म के आधार पर यह चयन किया गया है। एसीसी एनर्जी को स्टोर करने का एडवांस टेक्नोलाजी है। इसका उपयोग इलेक्ट्रिक वाहनों और पावर बैकअप के लिए किया जाएगा।

नई दिल्ली। भारी उद्योग मंत्रालय ने प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव (पीएलआई) स्कीम के तहत 10 गीगावाट-ऑवर (जीडब्ल्यूएच) क्षमता वाले एडवांस्ड केमेस्ट्री सेल (एसीसी) बैट्री मैन्युक्चरिंग के लिए मुकेश अंबानी के नेतृत्व वाले रिलायंस इंडस्ट्रीज समूह का चयन किया है। मंत्रालय के मुताबिक, गुणवत्ता व लागत मैकेनिज्म के आधार पर यह चयन किया गया है। एसीसी एनर्जी को स्टोर करने का एडवांस टेक्नोलाजी है जिसके तहत इलेक्ट्रिक एनर्जी को इलेक्ट्रोकेमिकल एनर्जी के रूप में स्टोर किया जाता है और फिर जरूरत पड़ने पर उसे बिजली में बदला सकता है। इसका इस्तेमाल इलेक्ट्रिक वाहनों से लेकर पावर बैक जैसी जगहों पर किया जा सकता है।

3 हजार करोड़ से ज्यादा का इंसेंटिव

पीएलआई स्कीम के तहत 10 जीडब्ल्यूएच एसीसी स्टोरेज क्षमता विकसित करने के लिए सरकार की तरफ 3620 करोड़ रुपए इंसेंटिव दिए जाएंगे। रिलायंस के अलावा एसीएमई क्लीनटेक सोल्यूशन, अमारा राजा एडवांस सेल टेक्नोलाजी, अन्वी पावर इंडस्ट्रीज, जेएसडब्ल्यू नियो एनर्जी, लुकास टीवीएस लिमिटेड ने पीएलआई स्कीम के तहत एसीसी बैट्री स्टोरेज मैन्युफैक्चरिंग के लिए आवेदन किए थे। पीएलआई स्कीम के तहत वर्ष 2021 में 50 जीडब्ल्यूएच क्षमता वाली एसीसी मैन्युफैक्चरिंग सुविधा विकसित करने का प्रस्ताव लाया गया था।

सोना हुआ सस्ता, चांदी भी लुढ़की; जानिए क्या है लेटेस्ट प्राइस

सोने लगातार तीन दिनों से सस्ता हो रहा है। हालांकि अभी सोने की कीमतों में बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं दिख रहा क्योंकि व्यापारी शुक्रवार को आने वाले अमेरिकी रोजगार डेटा का इंतजार कर रहे हैं। इससे फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में कटौती के लिए संभावित रास्ते के बारे में नई जानकारी मिल सकती है। अगर दरों में कटौती होती है तो सोने की कीमतों को पंख लग सकते हैं।

नई दिल्ली। सोने की कीमतों में गिरावट का सिलसिला जारी है। विदेशी बाजारों में सुस्ती के दरम्यान बुधवार को राष्ट्रीय राजधानी में सोने की कीमत 450 रुपये गिरकर 73,600 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गई। यह लगातार तीसरा कारोबारी सत्र है, सोने के भाव में गिरावट आई है। पिछले सत्र में 99.9 प्रतिशत शुद्धता वाली पीली धातु 74,050 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी।

अखिल भारतीय सर्राफा संघ के अनुसार, चांदी की कीमत भी 1,650 रुपये गिरकर 83,600 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई, जो पिछले बंद के 85,250 रुपये प्रति किलोग्राम थी। इस बीच, 99.5 प्रतिशत शुद्धता वाला सोना भी 450 रुपये गिरकर 73,700 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। घरेलू स्तर पर व्यापारियों के मुताबिक, आभूषण विक्रेताओं और खुदरा खरीदारों की ओर से मांग में कमी के साथ-साथ वैश्विक प्रभावों के कारण सोने की कीमतों में गिरावट आई।

अंतरराष्ट्रीय बाजारों में कॉमेक्स सोना 0.13 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2,519.80 डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहा था। एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटीज के सीनियर एनालिस्ट सौमिल गांधी ने कहा, ₹अमेरिकी मैन्युफैक्चरिंग डेटा मंगलवार को जारी हुआ, जो काफी निराशाजनक था। इससे बुधवार को यूरोपीय बाजारों में नरमी आई। इससे सभी असेट क्लास में वैश्विक स्तर पर बिकवाली शुरू हो गई और बाजार का मिजाज निराशाजनक हो गया।'

सोने की कीमतों पर एक्सपर्ट की राय

कोटक सिक्योरिटीज में कमोडिटी रिसर्च की एवीपी कायनात चैनवाला के अनुसार, अमेरिकी आर्थिक डेटा जारी होने के एक महत्वपूर्ण सप्ताह से पहले डॉलर में मजबूती, मुनाफावसूली और स्थिति समायोजन के कारण कॉमेक्स सोना फिसला। चैनवाला ने कहा कि अभी सोने की कीमतों में बहुत ज्यादा हलचल नहीं दिख रही, क्योंकि व्यापारी शुक्रवार को आने वाले अमेरिकी रोजगार डेटा का सावधानी से इंतजार कर रहे हैं। इससे फेडरल रिजर्व द्वारा दरों में कटौती के लिए संभावित रास्ते के बारे में नई जानकारी मिल सकती है।

आनंद राठी शेयर्स एंड स्टॉक ब्रोकर्स के एवीपी - कमोडिटीज एंड करेंसीज मनीष शर्मा ने कहा, ₹मौजूदा भू-राजनीतिक जोखिम और अमेरिकी फेडरल रिजर्व (फेड) द्वारा ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदों ने सोने को कुछ हद तक सहारा दिया है।₹ एंजेल वन में डीवीपी-रिसर्च, नॉन-एग्री कमोडिटीज एंड करेंसीज प्रथमेश माल्या के अनुसार, हालिया गिरावट के बावजूद 2020 के बाद 2024 सोने के लिए सबसे बेहतर साल बनने वाला है। इसे अमेरिकी ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद और मध्य पूर्व में चल रही भू-राजनीतिक चिंताओं से बल मिला है।

वाराणसी और आगरा समेत 17 शहरों में तैयार हैं स्मार्ट सिटी, 34 शहरों में 90 प्रतिशत काम पूरा

परिवहन विशेष न्यूज

स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट को लेकर सरकार ने दावा किया है कि 17 शहरों में सौ प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। इसके साथ ही 34 शहरों में इन प्रोजेक्ट से जुड़े 90 प्रतिशत से अधिक काम हो चुका है। जिन शहरों में काम पूरा है उनमें आगरा बरेली वाराणसी झांसी भोपाल कोयंबटूर मदुरई पुणे रांची सूरत उदयपुर शिवमोगा वेल्लोर भुवनेश्वर कवरत्ती तुमकुरु और इरोड शामिल हैं।

नई दिल्ली। स्मार्ट सिटी मिशन की सफलता पर उठे सवालों के बीच केंद्र सरकार ने दावा किया है कि 17 शहरों में सौ प्रतिशत काम पूरे हो चुके हैं और 34 शहर ऐसे हैं जहां 90 प्रतिशत से अधिक कार्य हो गया है। दो विस्तार के बाद यह मिशन अगले साल मार्च में पूरा होना है। लंबित कामों को लेकर चिंता तो है, लेकिन पूर्वोत्तर के राज्यों वाले शहरों को छोड़कर शेष में समग्र प्रगति संतोषजनक है। बंगाल के शहरों में भी लंबे समय तक प्रगति की रफ्तार धीमी रही, लेकिन अब उनमें भी काम तेज हुआ है।

निर्धारित समय पर पूरी होंगी योजनाएं

अधिकारियों के मुताबिक निर्धारित समय तक लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा और अब राज्यों के साथ इस पर चर्चा हो रही है कि जो परियोजनाएं पूरी की गई हैं, उनके रखरखाव और उन्हें अपने संचालन के लिए आत्मनिर्भर बनाने के लिए क्या किया जाना चाहिए। मंत्रालय के अधिकारियों की ओर से एक संसदीय समिति के समक्ष पहले ही यह स्पष्ट किया जा चुका है कि अब इस मिशन के तहत कोई नई परियोजना को मंजूरी नहीं दी जाएगी और अवधि पूरी हो जाने के बाद राज्यों को अपने स्रोतों से ही लंबित काम पूरे करने होंगे।

कितना सुरक्षित है आपका हवाई सफर, एविएशन रेगुलेटर ने बताया

परिवहन विशेष न्यूज

एविएशन रेगुलेटर डीजीसीए के मुताबिक भारतीय हवाई क्षेत्र में विमानों के करीब आने की घटनाएं कम हुई हैं। प्रति दस हजार उड़ानों में लैंडिंग के समय अस्थिर अप्रोच का अनुपात लगातार घटा है और पिछले साल इसमें 23 प्रतिशत की कमी आई है। लैंडिंग अप्रोच किसी उड़ान का वह चरण होता है जब चालक दल विमान को 5000 फुट की ऊंचाई से नीचे उतारना शुरू करता है।

नई दिल्ली। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने बुधवार को कहा कि देश में विमानों के अस्थिर लैंडिंग अप्रोच और भारतीय हवाई क्षेत्र में जोखिम वाले 'एयरप्राक्स' की घटनाओं की संख्या 2023 में काफी कम हो गई। नियामक ने अपनी समीक्षा रिपोर्ट में कहा कि प्रति दस हजार उड़ानों में लैंडिंग के समय अस्थिर अप्रोच का अनुपात लगातार घटा है और पिछले साल इसमें 23 प्रतिशत की कमी आई है।

लैंडिंग अप्रोच किसी उड़ान का वह चरण होता है जब चालक दल विमान को 5,000 फुट की ऊंचाई से नीचे उतारना शुरू करता है। विमान के हवाईपट्टी तक पहुंचने के साथ यह चरण खत्म होता है। इसी तरह भारतीय हवाई क्षेत्र में प्रति 10 लाख उड़ानों में जोखिम वाले एयरप्राक्स की संख्या 25 प्रतिशत कम हो गई है।

दो विमानों के उड़ान के दौरान स्वीकार्य सीमा से अधिक नजदीक हो जाने को एयरप्राक्स कहा जाता है। डीजीसीए ने कहा कि प्रति 10,000 उड़ानों पर जमीन के करीब होने को लेकर जारी होने वाली चेतावनी में भी 92 प्रतिशत की कमी आई है जिससे नियंत्रित उड़ान के जोखिम में कमी आई है।

विमान मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देगी सरकार

केंद्रीय नागर विमानन मंत्री के. राममोहन नायडू ने बुधवार को कहा कि सरकार भारत में विमान विनिर्माण की योजना को आगे बढ़ाने के लिए एक विशेष इकाई (एसपीवी) स्थापित करने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि उद्योग के हितधारकों और अन्य लोगों के साथ मिलकर एक विशेष इकाई लगाई जाएगी। भारतीय वायुयान विधेयक-2024 को अगस्त में लोकसभा में पारित किया गया था। इसमें विमान के 'डिजाइन' और विनिर्माण को विनियमित करने के प्रविधान शामिल हैं, जो आत्मनिर्भरता के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' पहल का समर्थन करता है।

बूम के लिए तैयार भारतीय अर्थव्यवस्था? अगस्त में सर्विस सेक्टर की ग्रोथ ने तोड़ा 5 महीने का रिकॉर्ड

वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही में भारत की जीडीपी ग्रोथ सुस्त पड़ गई। यह आरबीआई के अनुमान से भी कम रही। इसकी बड़ी वजह लोकसभा चुनाव को बताया गया जिसके चलते विकास से जुड़ी कई गतिविधियां ठप रहीं। हालांकि अब चीजें धीरे-धीरे बेहतर होती दिख रही हैं। खासकर अगस्त में सर्विस सेक्टर की ग्रोथ 60.9 रही। यह पिछले पांच महीनों में सबसे अधिक है।

नई दिल्ली। पिछले पांच महीनों के दौरान अगस्त में भारत के सर्विस सेक्टर में सबसे तेज गति से विस्तार देखा गया। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया भारत सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक जुलाई में 60.3 से बढ़कर अगस्त में 60.9 हो गया। इसे काफी हद तक उत्पादकता लाभ और सकारात्मक मांग के रुझान से समर्थन मिला। खरीद प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब गतिविधियों में विस्तार से और 50 से कम अंक का आशय संकुचन से होता है।

कीमतों की बात करें तो कच्चे माल की लागत में छह महीने में सबसे कम वृद्धि हुई। मैन्युफैक्चरिंग और सर्विस सेक्टर दोनों में यही रुख देखने को मिला। इससे अगस्त में 'आउटपुट' मूल्य मुद्रास्फीति में कमी आई। सर्वेक्षण में कहा गया, 'भारत की सेवा अर्थव्यवस्था में शुल्क मुद्रास्फीति की समग्र दर मध्यम रही। जुलाई में देखी गई वृद्धि की तुलना में भी यह वृद्धि धीमी रही।' वहीं रोजगार का स्तर मजबूत बना रहा, हालांकि जुलाई की तुलना में नियुक्ति की गति मामूली धीमी रही।

भारत के लिए समग्र पीएमआई में अगस्त में मजबूत वृद्धि रही जो सेवा क्षेत्र में त्वरित व्यावसायिक गतिविधि से प्रेरित है। इसमें मार्च के बाद से सबसे तेज विस्तार हुआ। यह वृद्धि मुख्य रूप से नए ठेकों खासकर घरेलू ठेकों में वृद्धि से प्रेरित रही।

प्रांजुल भंडारी, मुख्य अर्थशास्त्री, एचएसबीसी इंडिया

इस बीच, एचएसबीसी इंडिया कंपोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स जुलाई की तरह ही अगस्त में भी 60.7 रहा। अगस्त के आंकड़ों से यह भी पता चला कि भारतीय वस्तुओं तथा सेवाओं के लिए दाम जुलाई की तुलना में कम बढ़े। मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों और उनकी सेवा समकक्षों दोनों ने अगस्त में लागत दबाव में कमी देखी। सर्वेक्षण में कहा गया कि मुद्रास्फीति की कुल दर छह महीने के निचले स्तर पर आ गई है।

अब स्टील कंपनियों के शेयरों में आएगी तेजी? चीन से इंपोर्ट घटाने की तैयारी में सरकार

चीन स्टील बाजार का सबसे दिग्गज खिलाड़ी है। लेकिन वहां 2020 से डिमांड कमजोर है। चीन में प्रॉपर्टी संकट बढ़ने से चीजें और भी ज्यादा खराब हो गई। इससे स्टील का भाव कई साल के निचले स्तर पर पहुंच गया। ऐसे में अपने स्टील को सस्ते भाव में भारत जैसे देशों में डंप करने लगा। चीन में स्टील की डिमांड लंबे वक्त तक कमजोर बनी रहने वाली हैं।

नई दिल्ली। भारत की स्टील कंपनियां काफी बुरे दौर से गुजर रही हैं। चीन लगातार सस्ता स्टील भारत में डंप कर रहा है। इससे घरेलू स्टील कंपनियों को भारी नुकसान हो रहा है और उनके मुनाफे पर भी दबाव बन रहा है। हालांकि, अब भारतीय स्टील कंपनियों को राहत मिल सकती है। भारी उद्योग मंत्री एचडी कुमारस्वामी का कहना है कि सरकार चीन से स्टील डंपिंग रोकने के लिए हर मुमकिन कदम उठाएगी। इससे संकेत मिलता है कि सरकार स्टील पर इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ा सकती है।

चीन से भारत में होने वाली स्टील डंपिंग घरेलू इंडस्ट्री के लिए काफी चिंताजनक है। सरकार घरेलू स्टील इंडस्ट्री के हित में जरूरी कदम उठाएगी। इसके लिए प्रधानमंत्री कार्यालय (PMO) और वित्त मंत्रालय से भी बातचीत की जाएगी। हम चीन से स्टील आयात पर शुल्क 7.5 फीसदी से बढ़ाकर 10-12 फीसदी करने का प्रस्ताव रखेंगे।

एचडी कुमारस्वामी, भारी उद्योग मंत्री

चीन सस्ता स्टील क्यों बेच रहा?

चीन स्टील बाजार का सबसे दिग्गज खिलाड़ी है। लेकिन, वहां 2020 से डिमांड कमजोर है। चीन में प्रॉपर्टी संकट बढ़ने से चीजें और भी ज्यादा खराब हो गई। इससे स्टील का भाव कई साल के निचले स्तर पर पहुंच गया। ऐसे में अपने स्टील को सस्ते भाव में भारत जैसे देशों में डंप करने लगा। चीन की बड़ी स्टील कंपनियों का मानना है कि वहां स्टील की डिमांड लंबे वक्त तक कमजोर बनी रहने वाली हैं। भारत के स्टील निर्माता लगातार सरकार से गुहार लगा रहे हैं कि चीन की स्टील डंपिंग पर लगाम लगाई जाए, क्योंकि इससे घरेलू उद्योग बर्बाद हो रहा है।

स्टील फर्मों के शेयरों का हाल?

स्टील कंपनियों के शेयरों में लंबे वक्त से सुस्ती बनी हुई है। JSW स्टील और टाटा स्टील जैसी बड़ी कंपनियों ने पिछले एक साल में करीब 15 फीसदी का रिटर्न दिया है। वहीं, उषा मार्टिन लिमिटेड से निवेशकों को एक साल में 2 फीसदी का घाटा हुआ है। स्टील कंपनियों का यह हाल बुल मार्केट के दौर में है, जब अधिकतर सेक्टर की कंपनियों के शेयरों में जबरदस्त तेजी देखी जा रही है।

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ जमकर लड़ाई लड़ रहा भारत, विकसित देशों से ज्यादा दिया योगदान

भारत ने जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए 2022 में जलवायु वित्त में 1.28 अरब डालर का योगदान दिया है। भारत का योगदान कुछ विकसित देशों के योगदान से भी ज्यादा है। ब्रिटेन स्थित थिंक टैंक ओडीआइ और ज्यूरिख क्लाइमेट रेजिलिएंस अलायंस के विश्लेषण में यह बात सामने आई है। हीं आस्ट्रेलिया स्पेन कनाडा और ब्रिटेन ने भी इस मोर्चे पर उम्मीद से खराब प्रदर्शन किया है।

नई दिल्ली। भारत ने जलवायु परिवर्तन रोकने के लिए 2022 में जलवायु वित्त में 1.28 अरब डॉलर का योगदान दिया है। बहुपक्षीय विकास बैंकों के माध्यम से किया गया भारत का योगदान कुछ विकसित देशों के योगदान से भी ज्यादा है।

12 विकसित देशों ने जलवायु वित्त में अपना उचित हिस्सा दिया

ब्रिटेन स्थित थिंक टैंक ओडीआइ और ज्यूरिख क्लाइमेट रेजिलिएंस अलायंस के विश्लेषण में कहा गया है कि सिर्फ 12 विकसित देशों ने 2022 में अंतरराष्ट्रीय जलवायु वित्त में अपना उचित हिस्सा दिया है। इनमें नार्वे, फ्रांस, लक्जमबर्ग, जर्मनी, स्वीडन, डेनमार्क, स्विटजरलैंड, जापान, नीदरलैंड, आस्ट्रिया, बेल्जियम और फिनलैंड जैसे देश शामिल हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि जलवायु वित्त में महत्पपूर्ण कमी का कारण अमेरिका का अपने उचित हिस्से का योगदान न करना है। वहीं, आस्ट्रेलिया, स्पेन, कनाडा और ब्रिटेन ने भी इस मोर्चे पर उम्मीद से खराब प्रदर्शन किया है। विश्लेषण में शीर्ष 30 उच्च आय वाले और औद्योगिक रूप से विकसित देशों की पहचान की गई, जिन्होंने 2022 में विकासशील देशों को पर्याप्त जलवायु वित्त प्रदान किया है। इस समूह में पोलैंड और रूस जैसी अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं, जो मौजूदा समय में संक्रमण काल से गुजर रही हैं।

इसके अलावा 1992 से उच्च आय वाले देश का दर्जा प्राप्त करने वाले देश जैसे चिली, कुवैत, सऊदी अरब और दक्षिण कोरिया और बड़ी आबादी के साथ मध्यम आय वाले देश-ब्राजील, चीन, भारत, इंडोनेशिया, मेक्सिको, नाइजीरिया, फिलीपींस और पाकिस्तान भी इस समूह में शामिल हैं।

इन देशों ने दिया अपना हिस्सा

विकसित देशों जैसे ग्रीस ने 2022 में जलवायु वित्त में 0.23 अरब डॉलर, पुर्तगाल ने 0.23 अरब डॉलर, आयरलैंड ने 0.3 अरब डॉलर और न्यूजीलैंड ने 0.27 अरब डॉलर का योगदान दिया है। चीन ने बहुपक्षीय बैंकों के माध्यम से 2.52 अरब डॉलर, ब्राजील ने 1.35 अरब डॉलर, दक्षिण कोरिया 1.31 अरब डॉलर और अर्जेंटीना ने 1.01 अरब डॉलर का योगदान दिया है।

विकसित देशों ने 2009 में कोपेनहेगन में हुई जलवायु वार्ता काप 15 में सामूहिक रूप से 2020 तक सालाना 100 अरब डॉलर जलवायु वित्त में योगदान करने का वादा किया था। यह रकम जलवायु परिवर्तन रोकने और और इसके प्रभाव से निपटने में विकासशील देशों की मदद के लिए है।

सामूहिक योगदान का मतलब है कि किसी एक विकसित देश को तय रकम का योगदान करने के लिए नहीं कहा जा सकता है। इसीलिए भारत सहित दूसरे विकासशील देश जलवायु वित्त में योगदान के मोर्चे पर विकसित देशों की जवाबदेही बढ़ाने की व्यवस्था पर जोर दे रहे हैं।

पड़ोसी मुल्क पर केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने किया कटाक्ष, कहा- पाकिस्तान का बड़ा भाई बन जाएगा बांग्लादेश

केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि बांग्लादेश का नियंत्रण ऐसे हाथों में चला गया है कि वह पाकिस्तान का बड़ा भाई बन जाएगा। इस पड़ोसी देश से निवेशक मुंह मोड़ लेंगे। मंत्री की यह टिप्पणी बांग्लादेश में हाल में हुई हिंसा को लेकर आई है जिसके कारण बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन हुआ। उन्होंने आगे कहा कि हर क्षेत्र को उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना से जोड़ने की योजना है।

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि बांग्लादेश का नियंत्रण ऐसे हाथों में चला गया है कि वह 'पाकिस्तान का बड़ा भाई' बन जाएगा। इस पड़ोसी देश से निवेशक मुंह मोड़ लेंगे। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह दिल्ली के भारत मंडपम में 14-17 फरवरी को आयोजित होने वाले भारत टेक्स 2025 के एक पूर्व समारोह में बोल रहे थे। मंत्री की यह टिप्पणी बांग्लादेश में हाल में हुई हिंसा को लेकर आई है जिसके कारण बांग्लादेश में सत्ता परिवर्तन हुआ।

बांग्लादेश पाकिस्तान जैसा बन गया तो...

उन्होंने कहा कि अगर बांग्लादेश पाकिस्तान जैसा बन गया तो निवेशक वहां जाने से पहले सोचेंगे। अगर बांग्लादेश पाकिस्तान जैसा बन जाता है, तो निवेशक वहां जाने से पहले सोचेंगे। मंत्री ने यह भी कहा कि हर क्षेत्र को उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना से जोड़ने की योजना है।

कपड़ा मंत्रालय का समर्थन प्राप्त

गिरिराज सिंह ने कहा, '..हम हर क्षेत्र को इससे जोड़ने के लिए और अधिक पीएलआई योजनाएं लाने की कोशिश कर रहे हैं।' भारत टेक्स 2025 एक मेगा वैश्विक कपड़ा कार्यक्रम है, जिसका आयोजन कपड़ा निर्यात संवर्धन परिषदों के एक संघ द्वारा किया जा रहा है और इसे कपड़ा मंत्रालय का समर्थन प्राप्त है। यह कार्यक्रम भारत मंडपम और इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट ग्रेटर नोएडा के जुड़वां स्थलों पर एक साथ आयोजित किया जाएगा।

आधुनिकता के साथ प्रचलन से दूर होते जा रहे पारंपरिक शब्द

दिलीप मिश्रा, पत्रकार

समाज आज भले ही कितना भी आगे चला जाए लेकिन उसे अपनी संस्कृतियों को कभी नहीं भुलना चाहिए, क्योंकि वो संस्कृति सिर्फ मान्यता नहीं बल्कि उनकी एक पहचान भी थी. आजकल के समय में हम इतने आधुनिक हो गए हैं कि हम अपनी पुरानी चीजों को भूलते जा रहे हैं. हमारे पास इतनी सारी नई चीजें हैं कि हमारा ध्यान पुरानी चीजों की ओर रहा ही नहीं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि ये पुरानी चीजें हमारी संस्कृति और परंपरा का हिस्सा हैं? हमारे दादा-दादी और नाना-नानी के समय में कई शब्द थे, जिसे अब हम भूलते जा रहे हैं. भोर से लेकर तड़के तक जो शब्द थे, उनसे हम कहीं दूर होते जा रहे हैं.

इन शब्दों को भूलने से हम अपनी संस्कृति और परंपरा को भूलते जा रहे हैं. इसलिए, हमें इन शब्दों को संजोए रखने की जरूरत है. भोजपुरी और हिंदी दोनों कहीं न कहीं आपस में मेल खाते हैं. हिंदी वालों के भोजपुरी और भोजपुरी वालों को हिंदी आसानी से समझ आ जाता है. इन दोनों भाषाओं में किसी को समझने में किसी को कोई दिक्कत नहीं है, लेकिन जब से लोग आधुनिक होते गए और पश्चिम की संस्कृति भारत आते गई, लोग गंवई भाषा को भुलते चले गए. भोजपुरी से लेकर हिंदी और खासकर बिहार और यूपी के क्षेत्रों में ठेठ भाषा का भी इस्तेमाल किया जाता है. बदलते वक्त में भोजपुरी और ठेठ में वो मिठास नहीं रहा, जो पहले हुआ करता था.

कई शब्द प्रचलन से होते जा रहे गायब

यूपी और बिहार के साथ पूर्वांचल के इलाकों में कई ऐसे शब्द है, जिनके जरिए अपनत्व और मिठास का अनुभव होता है. गंवई समाज में सुबह यानी की सुर्योदय से पहले के समय को भोरहरिया, भोर और तड़के जैसे शब्द और शाम की बेला को गदबेर, गदबेरिया कहा जाता था. लेकिन ये प्रथा मोर्निंग और इवनिंग ने खत्म सा कर दिया है. ये सच है कि मानव सभ्यता के साथ परंपरागत शब्दों का प्रचलन खत्म सा होता जा रहा है, और आज की पीढ़ी उससे अनजान भी है. उपरोक्त शब्द ना सिर्फ पहले के समय में प्रचलन में थे, बल्कि लेखक अपने पुस्तकों में उन शब्दों का उपयोग भी करते थे. प्रेमचंद के कई कहानियों में गदबेर और भोरहरिया जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया है.

भोजपुरी को बढ़ावा लेकिन शब्दों का प्रचलन खत्म

आज बिहार और यूपी में भोजपुरी को प्रमोट किया जा रहा है. युनिवर्सिटी में भोजपुरी का पाठन कराया जा रहा है, लेकिन भोजपुरी समाज ने कई शब्दों को खो दिया है. भोजपुरी में टटका, बासी, चवरधोवन, अदहन, लेवन, डेकची, सिलवट, लोढ़ा, कोठिला, होरहा, अंगेठा, ओखर, मुसर, दोला पाती, आईस पाइस, अंटी, चोर सिपाही, जैसे शब्द प्रचलन में थे, वो अब गायब होते जा रहे हैं. खेती के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द हल, जुआठ, हेंगा, हराई, आदि शब्द भी गायब है. घरों में प्रयोग होने वाले ढेंका, जांता, ताखा, दियरखना, ओसारा दालान, झाड़- बहनी, दादी की जगह अईंया और मईंया, पति को भतार, शिकायत को ओरहन, घर को लिपना -पोतना, मुफ्त, उधार को पईंचा, खेती की शुरूआत से पहले समहुत, घलुआ, मंगनी, धूर आदि शब्द आज प्रचलन से गायब हो चुके हैं. ये वो शब्द थे, जिनके बिना गंवई दिन का प्रचलन नहीं के बराबर था. लौकी की छौंक वाली परंपरा भी बदलते जा रही है.

गवंई संस्कृति में भी माई -बाबूजी के जगह मम्मी और पापा ने ले लिया. किसी को प्रणाम करने के बाद जो आशीर्वाद दिया जाता था- जियर रहअ.. वो भी अब खुशी रहिए में तब्दील हो गया. आज के समय में परिवार एक साथ नहीं बल्कि अगल रहना चाहता है. इसलिए इस प्रथा के चलते अंगना- दुआर और दालान ओसार की प्रथा को खत्म कर दिया. घर में बैठने के लिए पीढ़ा का इस्तेमाल होता था, लेकिन अब वो मेज और कुर्सी ने जगह ले ली. आनाज रखने के लिए पहले मिट्ठी का कोठिला हुआ करता था, लेकिन अब उसके जगह स्टील का ड्रम ले चुका है. सूंप, दउरा, लउर, पैना, बाती, समधी, पहुना, पल्लो आदि शब्द का प्रयोग अब कहां ही होता है. पहले ताड़न शब्द का भी खुब उपयोग हुआ करता था, लेकिन बाद में विवाद और रामचरित मानस में इस शब्द का अपने मन से लोगों ने अनर्थ रूप दिया तो फिर वो प्रचलन से गायब हो गया. कम्प्यूटर के पहले लोग टाइपराइटर का उपयोग करते थे, ₹मोबाइल फोन₹ के पहले ₹लैंडलाइन फोन₹ का उपयोग करते होता था, और ₹इंटरनेट₹ के पहले लोग समय बिताने कि लिए ₹पुस्तकालय₹ जाया करते थे. आज तो मोबाइल की स्क्रीन पर ऊंगलियां सफरिंग करते रहती हैं.

अनुसूची में शामिल करने की मांग, शब्दों से किनारा

भोजपुरी को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग आज कोई नया नहीं है, बल्कि इसके लिए कब से मांग उठकती रही है. 2010 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन हुआ था, तब कांग्रेस की नेता और उस समय की लोकसभा की अध्यक्ष ने भी भोजपुरी में अपना भाषण देते उसके महानता पर प्रकाश डाला था. उस समय ये कहा गया था कि भोजपुरी ना सिर्फ भाषा है, बल्कि वो एक दर्शन है. इस भाषा में मैं जी जगह पर हम यानी की समुह को दर्शाया जाता है. आज विश्व में करीब 20 करोड़ से अधिक लोग भोजपुरी बोलने वाले हैं. उस समय मारिशस तक के लोग शामिल हुए थे. आज भी भोजपुरी फिल्मों का कोई अवार्ड शो होता है, तो वो मारिशस में होता है, क्योंकि वहां भी भोजपुरी वासी काफी संख्या में हैं. हालांकि लगभग सभी पार्टियों ने इसकी वकालत की है, लेकिन कांग्रेस ने इसे अपने समय में संविधान की अनुसूची में शामिल नहीं किया. अगर राजनीति पहलुओं से हटकर हम बात करें तो क्या हम भोजपुरी को संविधान की अनुसूची में शामिल कराने की क्षमता रखते हैं. भोजपुरी समाज के लोग अब खुद बाहर जाकर अपनी भाषा का प्रयोग की जगह हिंदी और अंग्रेजी का सहारा लेते हैं. भोजपुरी बोलने में उनका लज्जा आती है. इसके साथ ही कई शब्दों से हम परहेज करते जा रहे हैं, ऐसे में हम भोजपुरी के लिए लड़ाई कैसे लड़ सकते हैं.

आज कल कई युनिवर्सिटी में भोजपुरी में क्लास चल रहे हैं, लेकिन हम बोलचाल में अपनी भाषा को बदलते जा रहे हैं. अब हमें अपने बच्चों और अपने समाज के लोगों को उन शब्दों से फिर से अवगत होना होगा, जो कभी प्रचलन में था. अगर हम भोजपुरी के प्रचलन को बढ़ाएंगे तब ही आगे इसके लिए कोई लड़ाई लड़ सकते हैं. प्रचलन से हटते हुए शब्दों के बारे में बताना आज के पीढ़ी को बताना चाहिए ताकि वे अपनी संस्कृति और परंपरा को समझ सकें. इसके अलावा, हमें अपनी पुरानी चीजों को भी संजोए रखने की जरूरत है. जैसे कि हमारे घरों में पुरानी तस्वीरें होती हैं, पुराने कपड़े होते हैं, और पुराने बर्तन होते हैं. इन चीजों को हमें संजोए रखना चाहिए ताकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा को समझ सकें. हमें यह समझना चाहिए कि हमारी संस्कृति और परंपरा हमारी पहचान है. इसलिए, हमें अपनी पुरानी चीजों को संजोए रखने की जरूरत है ताकि हम अपनी संस्कृति और परंपरा को समझ सकें और अपनी पहचान को बनाए रख सकें।

'हम पुराने युग में नहीं, जैसा राजाजी बोले वैसा चले', धामी सरकार को क्यों पड़ी SC से फटकार?

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी के उस फैसले पर कड़ी आपत्ति जताई जिसमें भारतीय वन सेवा के अधिकारी राहुल को राजाजी टाइगर रिजर्व का निदेशक नियुक्त किया गया है। उक्त अधिकारी को पहले कॉर्बेट टाइगर रिजर्व से अवैध पेड़ काटने के आरोपों के चलते हटा दिया गया था और अधिकारी के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही अभी भी लंबित है।

सीएम धामी को फटकार : जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस प्रशांत कुमार मिश्रा और जस्टिस केवी विश्वनाथन की पीठ ने कहा कि हम सामंती युग में नहीं हैं, जैसा राजाजी बोले वैसा चले.. मुख्यमंत्री को तर्क देना चाहिए था। कम से कम यह उम्मीद की जाती है कि जब वह अपने मंत्री और मुख्य सचिव से असहमत थे तो वह लिखित रूप में कारणों के साथ अपने विवेक का इस्तेमाल करेंगे।

मुख्यमंत्री कुछ भी कर सकते हैं? : पीठ ने जनविश्वास सिद्धांत के महत्व पर जोर दिया। पीठ ने कहा, 'इस देश में जनविश्वास सिद्धांत जैसा भी कुछ है। सार्वजनिक कार्यालयों के प्रमुख अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकते हैं जब वहां यह प्रविधान दिया गया है कि उन्हें (अधिकारी को) वहां तैनात नहीं किया जाना चाहिए। इसके बावजूद सिर्फ इसलिए ऐसा किया गया कि वह एक मुख्यमंत्री हैं और वह कुछ भी कर सकते हैं?'

क्या बोली उत्तराखंड सरकार? : उत्तराखंड सरकार की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एएनएस नादकर्णी ने कहा कि मुख्यमंत्री के पास ऐसी नियुक्तियां करने का विवेकाधिकार है। नादकर्णी ने शीर्ष कोर्ट से अगली सुनवाई के दौरान विस्तृत स्पष्टीकरण देने की बात कही।

ओडिशा में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या बढ़ती जा रही है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर् : ओडिशा में बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या बढ़ती जा रही है। घुसपैठ के लिए समुद्र तक पहुंच आसान हो गई है। आधी रात में, समुद्र तट पर मछली पकड़ने वाली कई नावें होती हैं। अधिकांश मछुआरे ओडिशा की धरती पर रहते हैं। कुछ महीनों तक तटीय इलाकों में छिपने के बाद, वे सरकारी ज़मीन पर कब्ज़ा कर रहे हैं।बांग्लादेश में गृहयुद्ध के हालात के बाद से ओडिशा में घुसपैठियों की संख्या बढ़ती जा रही है।कुछ अंतरराष्ट्रीय दलाल सक्रिय हो गये हैं। उन्होंने उन्हें ओडिशा लाने और उन्हें पहचान और आवास प्रदान करने की जिम्मेदारी ली है। तटरक्षक बल और समुद्री पुलिस स्टेशन कड़ी निगरानी रख रहे हैं।भारतीय जलमार्गों में प्रवेश करने से पहले अधिकांश घुसपैठिए अपने कपड़े बदलते हैं। सुरक्षा गार्डों को हटाना आसान नहीं है क्योंकि वे मछुआरों जैसे दिखते हैं। पश्चिम बंगाल में प्रवेश करने वाले बांग्लादेशी लोगों को बसों और ट्रेनों से बंशा लाया जा रहा है। बालासोर, भद्रक, जाजपुर के कुछ गांवों में बसें चलती हैं। जैसे ही घुसपैठिए और उपद्रवी मिट्टी को छूते हैं, दलाल उनकी बस्ती (आधार कार्ड, राशन कार्ड, सरकारी जगह की व्यवस्था) की व्यवस्था में लग जाते हैं। अधिकांश बांग्लादेशी पहले कुछ महीने दिहाड़ी मजदूर के रूप में बिताते हैं। इसके बाद वे चुनिंदा सरकारी जगहों पर रह रहे हैं। स्थानीय नेताओं को समय-समय पर दलालों द्वारा चुना जाता था। उनके लिए एक नई पहचान बनाना। समुद्र तट का 487 किलोमीटर का विस्तार घुसपैठियों के लिए मुख्य प्रवेश बिंदु है।

अच्छा नागरिक बनकर समाज,देश को मजबूत कर सकते है–आईएएस निवृति अवध

।।अच्छा नागरिक कैसे बन सकते है विषय पर सत्र।।

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा स्थानीय संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा में अच्छा नागरिक कैसे बन सकते हैं विषय पर एक्सपर्ट सत्र का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक लेफ्टिनेंट राजकुमार जैन ने बताया कि संगम विश्वविद्यालय सोशल एवं ग्रीन क्लब तथा पोषण संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में अच्छे नागरिक कैसे बने विषय पर संवाद किया गया ।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में भीलवाड़ा उपखंड अधिकारी निवृत्ति अवध सोमनाथ आईएएस, ने छोटे-छोटे उदाहरण के द्वारा अच्छे नागरिक के कर्तव्य एवं किस तरह से समाज सिस्टम एवं लोकतंत्र को अच्छे नागरिक के दायित्व निभाकर मजबूत कर सकते हैं समझाया। कार्यक्रम में मैनेजमेंट, विधि विभाग, आर्ट्स ह्यूमैनिटीज आदि संकाय के छात्र-छात्राओं ने एसडीएम निवृत्ति अवध से अपने प्रश्न पूछ कर अपने जिज्ञासा को शांत किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना, प्रो वीसी प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही, रजिस्टर प्रोफेसर राजीव मेहता, स्टूडेंट अफेयर डायरेक्टर, प्रो विनेश अग्रवाल, पोषण संस्थान के फाउंडर साकेत आंचलिया, लवीना लखानी, मुस्कान लालवानी सहित छात्र-छात्राएं एवं फैकल्टी आदि उपस्थित थे।

तेलगाना कुमावत समाज ने राजस्थान के केबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत व केबिनेट मंत्री अविनाश गेहलोत को सौपा ज्ञापन

कुमावत समाज तेलंगाना के अध्यक्ष तिलायचा सोनाराम कुमावत द्वारा राजस्थान सरकार के केबिनेट मंत्री जोराराम एवं केबिनेट मंत्री अविनाश गेहलोत को तेलंगाना राज्य मे कुमावत जाति को ओबीसी अधिकृत व अधिसूचित सूची मे सम्मिलित कराने के लिए पत्र देते हुवे तिलायचा सोनाराम, होतवाल बुधाराम, एकलिया शिवराम, हड़ीवाल सुरेश कुमार, मनावत नोरतमल आदि मौजूद थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023